વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાન (રજી.)

Reg. No. Bombay Public Trust Act
Vide Registration No. E-26475 (Mumbai)

80G - Registration No. AABTV2655BF20228

121/44-D, Vishwakunj CHS., Sector-1, Charkop, Kandivali (W),
Mumbai - 400 067. • www.vedicjyotishsansthanmumbai.com

Email : vjtvv1@gmail.com

ગુરુ પૂર્ણિમા મહોત્સવ

Guru Purnima Mahotsav

SUNDAY 9TH JULY 2023

VEDIC JYOTISH SANSTHAN (REGD.)

Classes in Gujrati & Hindi Medium

Our Centers : Borivali (Sat.) • Malad (Sun.) • Borivali (Mon.)

छिन्नमस्ता

परिवर्तनशील जगत् का अधिपति कबन्ध है और उसकी शक्ति ही छिन्नमस्ता है। विश्वकी वृद्धि-ह्रास तो सदैव होती रहती है। जब ह्रास की मात्रा कम और विकास की मात्रा अधिक होती है, तब भुवनेश्वरीका प्राकट्य होता है। इसके विपरीत जब निर्गम अधिक और आगम कम होता है, तब छिन्नमस्ता का प्राधान्य होता है।

भगवती छिन्नमस्ता का स्वरुप अत्यन्त ही गोपनीय है। इसे कोई अधिकारी साधक ही जान सकता है। महाविद्याओं में इनका तीसरा स्थान है। इनके प्रादुर्भाव की कथा इस प्रकार है - एक बार भगवती भवानी अपनी सहचरी जया और विजया के साथ मन्दाकिनी में स्नान करने के लिये गयीं । स्नानोपरान्त क्षुधाग्नि से पीड़ित होकर वे कृष्णवर्ण की हो गयीं। इस समय उनकी सहचारियों ने भी उनसे कुछ भोजन करने के लिये माँगा । देवी ने उनसे कुछ समय प्रतीक्षा करने के लिये कहा। थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के लिये कहा। इस पर सहचरियों ने देवी से विनम्र स्वर में कहा कि माँ तो अपने शिशुओं को भूख लगने पर अविलम्ब भोजन प्रदान करती है। आप हमारी उपेक्षा क्यों कर रही हैं ? अपने सहचरियों के मधुर वचन सुनकर कृपामयी देवी ने अपने खड्ग से अपना सिर काट दिया। कटा हुआ सिर देवी के बायें हाथ में आ गिरा और उनके कबन्ध से रक्त की तीन धाराएँ प्रवाहित हुई। वे दो धाराओं को अपनी दोनों सहचरियों की ओर प्रवाहित कर दीं, जिसे पीती हुई दोनों प्रसन्न होने लगीं और तीसरी धारा को देवी स्वयं पान करने लगी। तभी से देवी छिन्नमस्ता के नाम से प्रसिद्ध हुई।

ऐसा विधान है कि आधी रात अर्थात् चतुर्थ संध्याकाल में छिन्नमस्ता की उपासना से साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं। शत्रु-विजय, समूह-स्तम्भन, राज्य-प्राप्ति और दुर्लभ मोक्ष-प्राप्ति के लिये छिन्नमस्ता की उपासना अमोघ है। छिन्नमस्ता का आध्यात्मिक स्वरुप अत्यन्त महत्वपूर्ण है। छिन्न यज्ञशीर्ष की प्रतीक ये देवी श्वेतकमल-पीठ पर खड़ी हैं। दिशाएँ ही इनके वस्त्र हैं। इनकी नाभि में योनिचक्र है। कृष्ण (तम) और रक्त (रज) गुणों की देवियाँ इनकी सहचरियाँ हैं। ये अपना शीश काटकर भी जीवित हैं। यह अपने-आप में पूर्ण अन्तर्मुखी साधनाका संकेत है।

विद्वानों ने इस कथा में सिद्धि की चरम सीमा का निर्देश माना है। योगशास्त्र में तीन ग्रन्थियाँ बतायी गयी है, जिनके भेदनके बाद योगी को पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। इन्हें ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि तथा रुद्रग्रन्थि कहा गया है। मुलाधार में ब्रह्मग्रन्थि, मणिपुर में विष्णुग्रन्थि तथा आज्ञाचक्र में रुद्रग्रन्थि का स्थान है। इन ग्रन्थियों के भेदनसे ही अद्वैतानन्दकी प्राप्ति होती है। योगियों का ऐसा अनुभव है कि मणिपूर चक्र के नीचे की नाड़ियों में ही काम और रतिका मूल है, उसीपर छिन्ना महाशक्ति आरुढ़ है, इसका ऊर्ध्व प्रवाह होने पर रुद्रग्रन्थिका भेदन होता है।

छिन्नमस्ताका वज्र वैरोचनी नाम शाक्तों, बौद्धों तथा जैनों में समान रुप से प्रचलित है। देवी की दोनों सहचरियाँ रजोगुण तथा तमोगुण की प्रतीक है, कमल विश्वप्रपञ्च है और कामरति चिदानन्दकी स्थूलवृत्ति है। बृहदारण्यककी अश्वशिर-विद्या, शाक्तोंकी हयग्रीव विद्या तथा गाणपत्यों के छिन्नशीर्ष गणपति का रहस्य भी छिन्नमस्ता से ही सम्बन्धित है। हिरण्यकशिपु, वैरोचन आदि छिन्नमस्ताके ही उपासक थे। इसलिये इन्हें वज्र वैरोचनीया कहा गया है। वैरोचन अग्नि को कहते हैं। अग्नि के स्थान मणिपूर में छिन्नमस्ता का ध्यान किया जाता है और वज्रानाड़ी में इनका प्रवाह होने से इन्हें वज्र वैरोचनीया कहते है। श्रीभैरवतन्त्र में कहा गया है कि इनकी आराधना से साधक जीवभावसे मुक्त होकर शिवभावको प्राप्त कर लेता है।

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

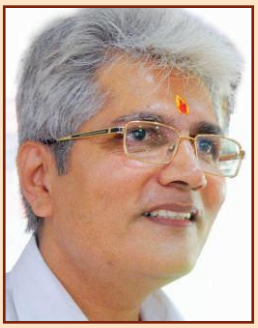

Acharya Ashokji
President - Hon. Trustee
(Jyotishalankar)

Harilal Malde
Hon. Principal

Varsha Raval
Hon. Vice Principal

Jayesh Waghela
Hon. Lecturer

Pradip Joshi
Hon. Lecturer

Nitin I. Bhatt
Hon. Lecturer

Tejas Jain
Hon. Lecturer

Pramila Panchal
Hon. Lecturer

Priti Thakar
Hon. Lecturer

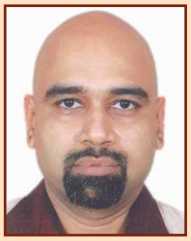

Dr. Himanshu Vyas
Hon. Lecturer

Vivek Shah
Hon. Lecturer

Rupal Damania
Hon. Lecturer

Swapnil Kotecha
Hon. Lecturer

Vikash Mishra
Hon. Lecturer

Himanshu R Oza
Hon. Lecturer

तस्मै श्री गुरुवे नमः ||

की मत्र बहुनोक्तेन शास्त्रकोटि शतेन च | दुर्लभा चित्त विश्रांती वीना गुरुकृपा परम ||

बहुत कहने से क्या ? करोड़ों शास्त्रों से भी क्या ? चित्त की परम शांति, गुरु के बिना मिलना दुर्लभ हैं |

'गुरु' का शाब्दिक अर्थ क्या हैं ? 'गु' अंधकार; और 'रू' अंधकार को दूर करने वाला | अर्थात गुरु हमारे जीवन से अंधकार को दूर करता हैं | महाकाव्य महाभारत के रचयीता श्री वेदव्यास जी को सम्मानित करने, उनके जन्मोत्सव को हम व्यास पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा के रुप में मानते हैं |

गुरु पूर्णिमा का त्योहार मुख्यत: दो प्रमुख समुदायो से जुड़ा हैं | हिंदू इस दिन भगवान सदाशिव की आराधना करते हैं | पौराणिक कथानुसार शिवजी ने अपने सात शिष्यों को (सप्तऋषीयो को) इसी दिन योग का ज्ञान दिया था | दूसरी और बौद्ध धर्म की नीव रखनेवाले भगवान बुद्ध की अर्चना करने के लिए बौद्ध धर्मीयो द्वारा मनाया जाता हैं | इस गुरु पूर्णिमा के दिन ही बुद्ध भगवान ने बोधिगया में बोधिवृक्ष के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त करने के बाद उत्तर प्रदेश के सारनाथ में अपना पहला उपदेशात्मक व्याख्यान दिया था |

ज्योतिषीयों के लिए इस पर्व का बहुत महत्व हैं | भगवान से भी बड़ा दर्जा गुरु को दिया गया हैं | गुरु के बिना जीवन कल्पना भी अधूरी हैं | हिंदू धर्म के अनुसार बृहस्पति देव सभी देवताओं और ग्रहों के गुरु हैं | ज्योतिषियों का मानना हैं की यह धनु राशि को पूर्ण चंद्रमा के साथ मिथुन राशि में सूर्य को एक करने का सबसे अच्छा समय बताता हैं | गुरु पूर्णिमा का त्योहार इन खगोलीय पिंडो की स्थिति से ज्योतिषीय अगत्यता रखता हैं | भगवान देवगुरु बृहस्पति के उपासक भी त्योहार को ज्ञान और ज्ञान के ग्रह से प्रार्थना करने का एक शुभ समय मानते हैं |

मुंबई उपनगर विस्तार में सन २००९ से हमारी वैदिक ज्योतिष संस्थान (रजि) ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा व स्वरज्ञान जैसे गुढ़ विषयों में नि:शुल्क ज्ञान देनेवाली प्रथम क्रमांक की संस्था हैं। भिन्न भिन्न चार केद्रों में ज्योतिषीय ज्ञान की प्याऊ लगातार पंद्रह वर्षो से चला रही हैं | जिनके लिए यह संस्था ही उनका सबसे प्यारा - लाडला बच्चा हैं, वैसे संस्थापक वंदनीय गुरुवर्य श्री. आचार्य अशोकजी ने इसे पूर्णिमा के पूर्ण चंद्र की तरह चमकाया हैं | उनकी छत्रछाया में, उन्ही के आदर्शों को अपना पथदर्शक मानकर चलनेवाले संस्था के सभी आदरणीय गुरुवर्य भी टिमटिमाते तारों की भाँती अपना यथाशक्ति ज्ञान योगदान दे रहे हैं |

दृष्टान्तो नैव दृष्टस्त्रिभुवनजठरे सदगुरोर्ज्ञानदातु: स्पर्शश्चेत्तत्र कलप्य: स नर्यात यदहो स्वहतामश्मसारम् |
न स्पर्शत्व तथापि श्रितचरगुणयुगे सद्गुरु: स्वीयशिष्ये स्वियं साम्यं विधते भवति निरुपमस्तेवालौकिकोडपि ||

तीनों लोक, स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल में ज्ञान देनेवाले गुरु के लिए कोई उपमा नहीं दिखाई देती | गुरु को पारसमणि के जैसा मानते हैं, तो वह ठीक नहीं हैं, कारण पारसमणी केवल लोहे को सोना बनाता हैं, पर स्वयं जैसा नहीं बनाता | सदगुरू तो अपने चरणों में आश्रय लेनेवाले शिष्य को अपने ही जैसा बनाता हैं | इसलिए गुरुदेव के लिए कोई उपमा नहीं हैं | गुरु तो अलौकिक हैं |

हमारी प्यारी वैदिक ज्योतिष संस्थान सदा हि पूर्ण चंद्रमा की भाँती चमकती - दमकती रहे यही पंद्रहवी शुभकामनाओं के साथ आचार्य गुरुवर्य श्री. अशोक गुरुजी एवमं सभी गुरुजनों को कोटि कोटि प्रणाम |

अनुमोदना ! अनुमोदना !! अनुमोदना बार बार |

हरी ओम

- वर्षा धीरज रावल

''हरी ॐ''

संस्था परिचय

वैदिक ज्योतिष संस्थान का मूल उदेस्य आज के आधुनिक युग मे ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र को पहले के जीतना ही आदर पात्र बनाना एंव ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र को जीवंत रखना तथा निस्वार्थ भावना से यह शास्त्रो का प्रचार व प्रसार करना है।

आज के युग मे यह ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र दोनो ही शास्त्रो को ऐसी निम्न कक्षा की गीनती पर लाकर खडा किया गया है की शास्त्र के रचयीताओ ने कल्पना भी नही की होगी ऐसी अवहेलना ईस युग मे हो रही है, लोग ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र मे विश्वास रखते ऐसा बताने मे भी जीजक अनुभव करने लगे है, लोग अपने को पिछडा समज लेगें यह डर रहता है, गुप्तता रखना चाहते है, शर्म का अनुभव करते है, आखीर क्यो ? क्योकि हम हमारी मूल संस्कृति से विमूख हो रहे है, संस्था लोगोके मानसपटल पर से उपरोक्त सारी झुठी गलत फहमी भेद-भरम तथा डरका निर्मूलन करने का निस्वार्थ प्रयास के साथ साथ लोगोको ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र के निर्मल ज्ञान प्रदान करने का ज्ञान यज्ञ चलाती है।

आज के युग में ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र से लोगो की आपेक्षा इस तरह बढ़ गई हे की जैसे आपकी समस्याओ का तुरंत निकाल, हाथो हाथ निकाल, तुरंत निवारण, लोगो को इन सारी अंधश्रद्धा से, पूर्वाग्रहो से बाहर लाना है । एलोपथी दवाई गोली लेते ही दर्द गायब, इस मानसिकता से लोगो को बाहर लाना है।

वैदिक ज्योतिष संस्थाने ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र का जो अभ्याषक्रम बनाया है वह वास्तव मे एक प्रकार के गणित की गणना तथा विज्ञान ही है, संस्था का यह अभ्याषक्रम पौराणीक द्रष्टांतो एवं उदाहरणो द्वारा अत्यंत सरल पद्धति से पढाया जाता है, यहा ज्योतिशास्त्र, वास्तुशास्त्र तथा स्वरज्ञान के विस्तृत अभ्याषक्रम ज्ञान दान की नि:शुल्क सेवा संस्था के मानद अध्यापको के द्वारा दी जाती है। किसी भी उम्र के ज्ञान पिपांसु एवं जीज्ञासु बंधु भगिनीयो को सहृदय आमंत्रण दीया जाता है। वर्षांत परिक्षाए लेकर प्रमाण पत्र दीया जाता है। यह शास्त्र हमे वेदो के द्वारा मिली हुई अमुल्य धरोहर है, वरदान है, न जाने हमारे भारत वर्ष के ऋषीमुनि योगीयो की कितने युगो युगो के परिश्रम का यह निचोड है इस अमृतरुपी रस का पान करे, ज्योतिष शब्द का अर्थ क्या है ? इस की ज्योत का प्रकाश इस प्रकाश के उजाले से स्वत: तथा लोगो के जीवन में उजाला लाना है।

मानद अध्यापकगण

श्री. आचार्य अशोकजी

श्री. हरिलाल मालदे, श्रीमति वर्षा रावल रावल, श्री. जयेश वाधेला वाघेला, श्री, प्रदिप जोषी,
श्री. नितीन भट्ट, श्री. तेजश जैन, श्रीमति प्रमीला पंचाल, श्रीमति प्रीती ठाकर,
डॉ. हीमांशु व्यास, श्री. विवेक शाह, श्रीमति रूपल दमणीया

www.vedicjyotishsansthanmumbai.com

શ્રી નિરંજનભાઈ જોશી
૧-૧-૧૯૨૭ થી ૧૩-૧૦-૨૦૧૪

શ્રી ગુરૂવર્ય

સૌરાષ્ટ્રના પ્રખ્યાત કેળવણીકાર અને સુપ્રસિદ્ધ શ્રી ઈશ્વરલાલ કરશનજી જોશી અને લક્ષ્મીબહેનને ત્યાં તા. ૧-૧-૧૯૨૭ ના રોજ ડેડાણ ગામે અર્વાચીન યુગના જ્યોતિષ ભાસ્કર શ્રી નિરંજનભાઈનો દ્વિતીય પુત્ર તરીકે જન્મ થયો. જરૂરી શિક્ષણ ગુજરાતમાં પુરૂં કરી ૫૦ના દાયકામાં મુંબઈ આવી અર્થોપાર્જન માટે પ્રવૃત્તી શરૂ કરી અને સાથે સાથે જ્યોતિષવિદ્યાની સાધનાની શરૂઆત કરી. પિતાશ્રી શ્રી ઈશ્વરલાલભાઈના સિદ્ધાંતોને પોતાના જીવનમાં સ્થાન આપી નિર્ણય કર્યો કે ''જ્ઞાનની પરબ હોય, વિદ્યાનું વેચાણ નહીં'' અને સન ૧૯૫૬ માં ચોપાટી પર આવેલ 'મરીના મોર્ડન' સ્કૂલમાં જ્યોતિષ શાસ્ત્રના નિઃશુલ્ક વર્ગો શરૂ કર્યા. એક જ ભાવના અને ખેવના સાથે કે ભણ્યા બાદ વિદ્યાર્થીઓ ધંધો કરશે તો પણ માર્ગદર્શક બનીને. પણ કમસેકમ લેભાગુ અને સ્વાર્થી જ્યોતિષોની જેમ સમાજને ગેરમાર્ગે તો નહીં દોરે. ચાર દાયકાથી વધુ તેમણે કરેલા આ જ્ઞાનયજ્ઞમાં ૪૫,૦૦૦થી વધુ ભાઈબહેનો જેમાં સામાન્ય માનવીથી માંડીને વૈજ્ઞાનિક, ડોક્ટરો, વકીલો અને નિવૃત્ત ન્યાયાધીશોને જ્યોતિષ જાણતા અને માણતા કર્યા. કોંક્રીટના જંગલ જેવા મુંબઈ શહેરમાં અઠવાડિયાના દરેક દિવસે કેન્દ્રમાં વર્ગ અને રવિવારે ત્રણ કેન્દ્રમાં વર્ગ જેમાં કામા હોલ, ગીરગામ, પ્રેમપુરી આશ્રમ, સાંતાક્રુઝ, મલાડ, બોરીવલી, માટુંગા, મુલુંડ અને ઘાટકોપર સામેલ હતાં.

જ્યોતિષશાસ્ત્રના પ્રસાર અને પ્રચાર માટે આજીવન ભેખ ધારી ૯-૯ કેન્દ્રમાં પોતે જ ભણાવેલ વિદ્યાર્થીઓના સાથ સહકાર લઈ યોગ્યતા પ્રમાણે અધ્યાપક નીમિને અવિરત જ્ઞાન પ્રસાર, પ્રચાર અને સમાજસેવા, માર્ગદર્શનનું જ્વલંત ઉદાહરણ કદાચ આવતા અનેક વરસો સુધી જોવા નહી મળે.

આજીવન નિઃસ્વાર્થ અને ભેખધારી નિષ્ઠાવાન વ્યક્તિત્વને શત શત વંદન.....

"संदेश"

Hiren Bhavsar
Ex. Principal

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि वैदिक ज्योतिष संस्थान मुंबई द्वारा आयोजित गुरु पूर्णिमा महोत्सव के उपलक्ष्य में एक स्मरणिका का प्रकाशन किया जाता है जिसमें Medal & Certificate Distributions तथा ज्योतिष के विषयों पर प्रकाश डाला जाता है।

मै इस अवसर पर अपनी शुभ कामनाए भेट करता हूँ और मंच को बधाई देता हूँ। इस प्रयास के सफलता की कामना करता हूँ।

ज्योतिष के क्षेत्र में वैदिक ज्योतिष संस्थान मुंबई का अपना ही विशेष स्थान है। यह स्मरणिका मील का पत्थर साबित होगी । इसमें व्यवाहारिक ज्ञान ज्योतिष का होगा, जो कि सरल शब्दों में आम जन तक पहुचाया जाएगा। यह वास्तविक तथ्यों पर आधारित होगा ।

मैं आशा करता हूँ कि इस स्मरणिका के माध्यम से ज्योतिष के विद्यार्थी अपनी बहु आगामी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए आगे आयेगें ।

स्मरणिका के सफल प्रकाशन तथा वैदिक ज्योतिष संस्थान-मुंबई के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

- Hiren Bhavsar

Rajendra R. Dave

Birth Date : 18.04.1973
Birth Place : Ahmedabad

He is compiler of Gayatri Pratyaksha Panchang and also associated with Janma Bhoomi Panchang Specially for calculation Eclipse and Muhurat Section.

*** Official Jyotish Adviser in Media :**
Hindu Today - UK
Divya Gujarat -Australiya
Rajashthan Patrika -Ahmedabad
Divya Bhaskar - Ahmedabad
Akila
Rakhewal - Palanpur
Nav Gujarat Samay - Ahmedabad

Sanman At British Parliyament

4 Time Sanman with Chief Minister Of gujarat including Narendra Modi and Anandiben Patel
3 Time Sanman : Bhai shree Ramesh bhai Oza at UK (London), Sojat, Porbandar
VHP - Dr. Pravin Togadiya and Dr. Ashok Shingal for Gou raksha and Hindutva Grand Meeting
Gujarat Gov. Chief Minister Mr. Narendra Modi invite and meet for Panchang debat at Ghandhinagar

*** Special Remarkebal Pooja :**
World Tallest Building at Dubai " Burge Khalipha " Bhoomi Poojan
UK Based Seven Star Hotel " TAJ HOTEL " Bhoomi Poojan and Opening at London
Gujarat Gov. Organized " Drem City " Bhoomi Poojan at surat with Gujarat Chief Minister Anandi ben Patel with all Minister cabinet
Dimond City Building Opening At Israel
More than 100 Dimond Show room Opening Pooja at Antverp City Belgium
Indoneshiya : Raj Ratna Metal Factory Opening Pooja
Dubai: Adani based Jain Temple Pran Pratishtha with Goutam Adani
* Bhagvad Katha Sayonjak -Sojat "Bhai shri Ramesh Oza -Porbandar
Gujarat Gov. Chief Minister Mr. Narendra Modi invite and meet for Panchang debat at Ghandhinagar
Tharad Atishrusti Poor vitaran sewa 10 days organize at Tharad and near Area in 2015
Many manyTime Big campaign for Save COW and they save more than 250 cow from Muslim Kasai Truck
London -UK , Arab country Abudhabhi, Oman , Sharjanh , Dubai, South Africa ,

શ્રીમતી સ્મિતાબેન આર. પારકર અનાવીલ બ્રાહ્મણ કુટુંબમાંથી આવેલ છે. એમણે એમ.એ. તથા M.Ed. કરેલ છે. તેમના જીવનનો મુદ્રાલેખ છે કે શાળા એ મંદિર છે તથા શિક્ષણ આપવું જે પુજા-આરાધના છે. તેઓ લગભગ ૧૮ વર્ષ સુધી શિક્ષિકા તરીકે સેવા આપી ચુક્યા છે. વિદ્યાર્થીઓને માર્ગદર્શન આપી એમને આગળ વધતા જોઈ ગર્વ અનુભવે છે, એમનું જીવન ધ્યેય છે કે દેશનું દરેક બાળક-બાલિકા શિક્ષિત હોય, શિક્ષણનો પ્રકાશ સર્વત્ર ફેલાય, શિક્ષા ક્ષેત્રે ૧૮ વર્ષની સેવા આપ્યા બાદ તેઓ સરકારના એજ્યુકેશન ઈન્સ્પેક્ટર (શિક્ષણ ક્ષેત્રે તપાસકર્તા) તરીકે ૬ વર્ષ સેવા આપી, આ દરમ્યાન તેઓને વિદ્યાર્થીઓની સમસ્યાઓનો સારો એવો અનુભવ થયો અને તેમની ઉત્કૃષ્ઠ સેવા તથા અનુભવને કારણે સરકાર દ્વારા મોટી જવાબદારી આપવામાં આવી જે (શિક્ષણ વ્યવસ્થા) એજ્યુકેશન સુપરીટેન્ડન્ટ તરીકેની હતી. અહીં તેમણે પોતાની કાર્ય સાધકતા, કાર્ય સમતા, સમર્થતાનો ઉત્કૃષ્ઠ પરિચય આપ્યા બાદ નિવૃત્ત થયા, પરંતુ બીજા લોકોની જેમ નિવૃત્તિ બાદ શાંત બેસવું એમના સ્વભાવમાં ન હોવાને કારણે તેઓ સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના મહિલા વિભાગમાં કાર્યરત રહે છે. તે ઉપરાંત તેઓ કુમારીકાઓ તથા યુવતીઓના સુધારા, પ્રગતી, શિક્ષણના લાભાર્થે કાર્ય કરનારી સંસ્થાના પ્રમુખ પદની જવાબદારી પણ સંભાળે છે. વેદિક જ્યોતિષ સંસ્થા તેમની આ સેવામય સફરમાં હંમેશા આગળ વધવાની શુભેચ્છા આપે છે અને ઈશ્વર તેમને આ કાર્યમાં હંમેશા આગળ વધવાની શક્તિ પ્રદાન કરે અને આપણી સંસ્થાના ગુરૂપૂર્ણિમા સમારોહના માનવંતા મહેમાન બનવાનું આમંત્રણ સ્વિકારવા બદલ આભાર વ્યક્ત કરે છે.

યુવાનને અશાંતિ હોય એટલે સલાહ લેવા મિત્રો કે સમદુ:ખીયા પાસે જતા હોય, ત્યારે બની શકે કે અધર્મના માર્ગે કમાઈને સફળ બનવાના નુસ્ખા સુઝાડે. મિત્રોની સલાહ પ્રમાણે ચાલે એટલે માતા-પિતાની જવાબદારી અને ગભરાટ વધી જાય છે. માતા-પિતા પરમાત્મા અને પ્રારબ્ધ પર વિશ્વાસ વધારી, ધીરજ રાખવાની સલાહ આપે. ધર્મનો રસ્તો આર્યુવેદીક દવા જેવો છે, અસર કરે પણ વાર લાગે. રોગને જડમૂળમાંથી કાઢી નાખે. કોઈક કિસ્સામાં સંસ્કારી ઘરના સંતાનોને ધર્મનાં માર્ગે સફળતા ન મળે તો આળસુ અને ભોગી પણ બની જાય છે. આવા સમયે મા-બાપે તર્કવ્યનિષ્ઠાની વાતો દૃષ્ટાંત, વાર્તા વ્દારા સમજાવી સંતાનને કર્તવ્યમાં લગાડેલો રાખવો જોઈએ.

ઘણા યુવાનો માતા-પિતાનું સાંભળે જ નહીં. છતા જીવનમાં કોઈતને તો આદર્શ બનાવે જ, કોઈ બિલ ગેટ્સને તો કોઈ મુકેશ અંબાણીને તો કોઈ રાજકારણીને. આ બધા આદર્શો પત્તાના મહેલ જેવા છે, ક્યારે ખરી પડશે કહેવાય નહીં. હિરો - હિરોઈન રૂપી આદર્શ તો સ્વપ્ન સમાન છે. સ્વપ્નમાં લાગેલી લોટરીના પૈસામાંથી એકપણ રૂપિયો ખરેખર કામ ન લાગે. તેમ હિરો - હિરોઈનનું પડદા પર દેખાતું જીવન બિલ્કુલ જીવવા લાયક હોતું નથી. માતા-પિતા ઓછા નામે સારા ભક્ત, સંતો કે આજના જમાનાના સાધકનાં આદર્શો આપે. તેના જીવન ચરિત્રને વાંચવા અને સમજવા વિનંતી કરે.

મોટા ભાગના યુવાનો કોલેજમાં આવતાની સાથે મોબાઈલ, કોમ્પ્યુટર અને સ્પર્શ સુખનાં વ્યસનમાં ફસાઈ જતા હોય છે. ગર્લફ્રેન્ડ બોયફ્રેન્ડ સાથે ન જામ્યુ તો બ્રેકઅપ થતા વધુ ખતરનાક વ્યસન સિગરેટ, ગુટકા, શરાબ કે ડ્રગ્સનાં વ્યસનમાં ફસાય છે. કોઈ ધંધામાં સફળ થાય તો ખુશીનાં માર્યા વ્યસન-પાર્ટીની આદતમાં ફસાય છે.

એક શાયરે સુંદર કહ્યુ છે કે,

વાગે ના ઠોકર, જો આંખ ઉઘાડો ઉંધે જે જીવ, એને જગાડો, જીવનનો માર્ગ જોખમ ભરેલો, કોઈ વિચારી પગને ઉપાડો,
યૌવનને રસ્તે રેતી સુંવાળી, પોચી મજાની લાગે હુંફાળી, જો જે ન ખુંપે પગને સંભાળો, મનનાં વિકારો મનમાં ઘટાડો,

જીંદગીનાં મારગમાં ઝાઝા છે કાંટા, ઢેફાં કોઈમાં કોઈમાં કણો, છોડી ના દેશો શ્રધ્ધાની કેડી, શંકા-કુશંકા મનમાંથી કાઢો,
લક્ષ્મીના પંથે દારૂની પ્યાલી, હોઠે અડાડી તો થાય પાયમાલી, નશો ના આવે નાણાંની સાથે, એવી સદ્‌બુધ્ધિ દિલને સુઝાડો.

- નિકુંજ શેઠ

Well Wishers

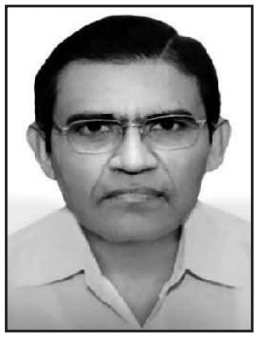

Dilip N. Gala

Umesh Bhatt

Apurva R. Parekh
Web Adviser

Kiran Shah

Viral Mehta

Nilay Chaubal
Web Designer

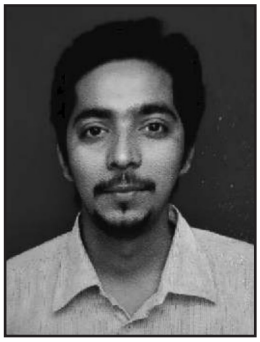

Parth Pandya

Jayesh Desai
Souvenir Editor

Ronak Trivedi

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

Winner of the Silver Medal for Excellence

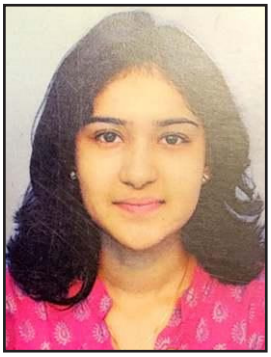

NEHA M SHAH
Vedic Hastrekha Vignata
1st Year

SONAL G JOSHI
Vedic Jyotish Pravesh
1st Year

NEETA D MAHYAVANSHI
Vedic Vastu Pravesh
1st Year

NEETA M KHATRI
Vedic Jyotish Bhushan
2nd Year

TRISHA R SINGH
Vedic Vastu Bhushan
2nd Year

VIKASH MISHRA
Vedic Jyotish Martand
3rd Yr.

PRAGNA A SHETH
Vedic Swargyan Gnyata
Vedic Nibandh Spardha 2023

ત્રણ વાતને યાદ રાખશો નહિં - તમારૂં કો'કે કરેલું અપમાન, તમે કરેલો ઉપકાર અને બીજાના દુર્ગુણો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY

Ansul B. Lodha

Bhadresh K. Shah

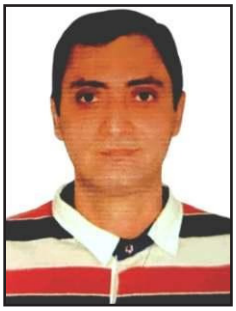
Bhavik J. Sanchala

Chhaya V. Chheda

Chhaya P. Shah

Dexa V. Katelia

Devang B. Damani

Disha D. Mandavia

Gaurav A. Desai

Girish H. Dhamu

Gunjan R. Sachdev

Hetal B. Gohil

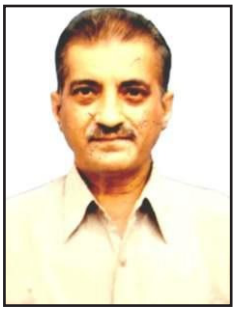
Himanshu B. Vyas

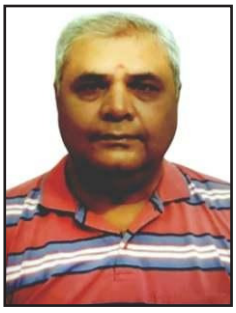
Hitesh D. Jogi

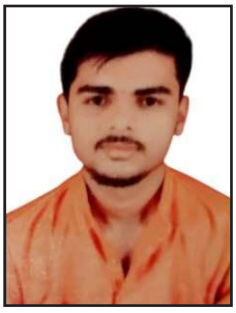
Jay S. Jani

Jay D. Jani

બધી જ કલાઓમાં જીવન જીવવાની કલા બેસ્ટ છે, સારી રીતે જીવી જાણે એ જ સાચો કલાકાર.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY

Jigar P. Shah

Jigna J. Pandya

Jigna J. Vora

Jignasha N. Parikh

Jignesh S. Marfatia

Jignesh J. Jani

Jimisha A. Makwana

Jinal S. Trivedi

Jitendra K. Panchal

Kanshika J. Pandya

Krunnal C. Parmar

Krunal A. Shah

Krupa M. Utekar

Laxmi K. Solanki

Madhavi D. Kapse

Mamta D. Kamdar

બધા જ સદ્‌ગુણો વિનમ્રતાના પાયા પર ઉભા છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - SATURDAY

Nilam B. Sanchala

Pareshkumar B. Pabari

Pavankumar V. Sahal

Pourush B. Gutta

Prashant T. Dhepe

Priti T. Vora

Rachana L. Parekh

Ramesh J. Solanki

Rina Shaah

Rita N. Shah

Rupa A. Dhruva

Rushi Y. Jani

Viral V. Shah

Vishakha C. Vadia

Yashvi Panchal

મા-બાપને આપેલો સાચો વારસો પૈસા નહિં પણ પ્રમાણિકતા અને પવિત્રતા છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SATURDAY

Alpa R. Shah

Chetana H. Parmar

Deepika R. Patel

Gaurang P. Trivedi

Heena C. Chheda

Jinesh D. Kantharia

Khyati K. Vora

Krupali P. Yadav

Meena D. Pithava

Meena N. Shah

Meeta P. Shrimankar

Meeta S. Shah

Niyati B. Mehta

Pooja M. Bhayani

Pooja M. Vora

Priti F. Shah

દુઃખમાં પણ પ્રેમ હોય તો માણસ સુખેથી જીવી શકે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - SATURDAY

Riddhi S. Savla

Sonal N. Chikani

Sunil G. Danduliya

Vijay P. Jagad

OUR ARDENT STUDENTS - 3RD YEAR - SATURDAY

Binita P. Thakkar

Jinesh M. Shah

Meena V. Anand

Neeta M. Khatri

Pragna A. Sheth

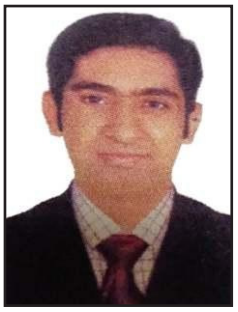
Rakesh K. Panchal

Trupti H. Parekh

Varsha H. Joshi

OUR ARDENT STUDENTS - SW 2022

Anand V. Soni

Paru J. Purohit

Ramesh M. Ashar

Shilpa S. Parab

Sonal D. Oza

જીવનમાં સુવાસ અને પ્રભુમાં વિશ્વાસ - આ સૂત્રને જો આપણે જીવનમાં ચરિતાર્થ કરી શકીએ તો જીવન ધન્ય બની શકે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD

Ajay S. Parmar

Alka R. Varde

Anita M. Dhakan

Bharti P. Patel

Deven D. Shah

Dhanraj P. Bhadark

Jatin R. Desai

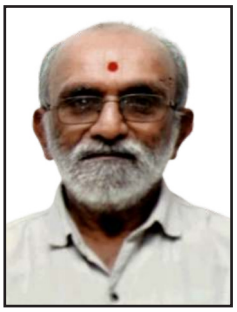
Kantilal H. Patel

Kaushik N. Dave

Leena J. Ravani

Maheshkumar D. Parmar

Mohit A. Shah

Nikhil J. Kothari

Nutan I. Shah

Rajen R. Vyas

Sachin P. Rajgor

સત્ય અને અહિંસા એ દરેક વ્યક્તિની આંતરિક શક્તિનું પ્રતીક છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD

Sarika R. Soni

Urmish P. Desai

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD

Anand N. Doshi

Avinash B. Bhagalia

Bhavin G. Salvi

Himanshu J. Joshi

Indira S. Acharya

Jay M. Joshi

Kalpita J. Joshi

Heeta D. Mahyavanshi

Shivam H. Joshi

Snehal V. Shah

Sonal G. Joshi

Yogesh B. Popat

ત્રણ વાતને યાદ રાખશો નહિં - તમારૂં કો'કે કરેલું અપમાન, તમે કરેલો ઉપકાર અને બીજાના દુર્ગુણો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - MALAD

Amish M. Sheth

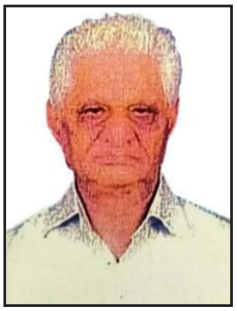
Bhagwandas N. Mehta

Bhamini I. Bhatt

Dharmendra D. Dave

Dharmessh Desai

Kshitij B. Dave

Leena A. Sharma

Praful P. Seta

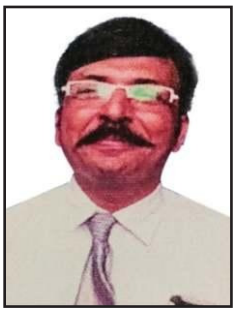
Prashant D. Badheka

Yogesh U. Khatri

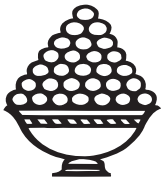

સાહસ ગયું તો સમજી લેવું કે માણસની અડધી સમજદારી પણ ગઈ.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SW - MALAD

Amar S. Upadhyay

Deepa A. Joshi

Dilip N. Gala

Megha A. Shah

Premal P. Soni

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD (HINDI)

Arvind R. Yadav

Ankitkumar R. Didwania

Devilal C. Jain

Dhanpal M. Mandawat

Gourav S. Kheria

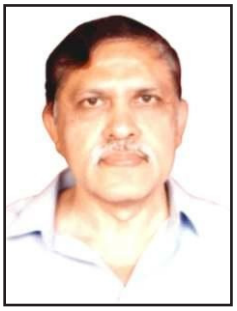
Gulshan D. Mehra

Hariom Sukla

Hemraj P. Zaware

ત્રણ વસ્તુને વેડફો નહિં - સમય, પૈસો અને યુવાની.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD (HINDI)

Hrithik R. Jain

Jaysing A. Khamkar

Kala P. Jain

Kavita S. Jain

Kedarnath K. Modi

Kiran T. Band

Madhavi V. Borhade

Manjushri A. Sharma

Meena Y. Gowda

Mona P. Agarwal

Naresh L. Patel

Neelam B. Nandwana

Palak K. Shroff

Rajiv M. Bansal

Rashmi H. Pariyani

Sana J. Mukadam

અંધ અનુકરણ કરવાથી આત્મવિકાસને બદલે આત્મ-સંકોચ થાય છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MALAD (HINDI)

Sanskruti S. Gole

Swatantrakumar Mishra

Sweta S. Shyamsunder

Vandana S. Mishra

Vashu A. Jha

Vijayan Nambiar

Vinodkumar K. VP

Vinod R. Teli

Vivek O. Upadhyay

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD (HINDI)

Anjali A. Ambre

Deepak N. Rane

Kavita K. Oza

Komal M. Jaiswal

Lata J. Jain

Mamta R. Sharma

Naresh P. Chhabaria

Nirmala K. Vyas

પગલું ભરતા પહેલાં જે વિચાર નથી કરતો એ ક્યારેય સ્થિર નથી ઊભો રહી શકતો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MALAD (HINDI)

Poonam O. Yadav

Pradnya N. Chavan

Radhesyam G. Kumavat

Ramkrishna S. Mishra

Sarda R. Kumavat

Sheela V. Katheeh

Shyamsunder Lakhotia

Shyam K. Mishra

Surender A. Rati

Sony R. Chimnani

Sujitkumar R. Pandey

Tina J. Pandit

ॐ
महामंत्र

સ્નાનથી તન, દાનથી ધન, સહનશીલતાથી મન અને ઈમાનદારીથી જીવન શુદ્ધ બને છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - THIRD YEAR - MALAD (HINDI)

Chetan B. Gadhiya

Dharmaveer T. Gupta

Indira M. Gupta

Kuddimal J. Modi

Maitri R. Kenia

Rakesh H. Sawlani

Rakesh Kumar Singh

Sanket A. Garg

Trisha R. Singh

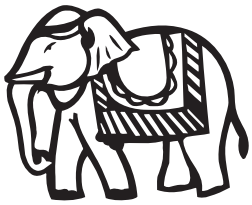

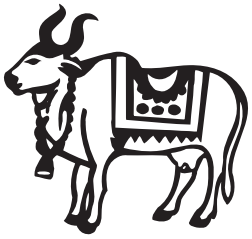

OUR ARDENT STUDENTS - SW - MALAD (HINDI)

Anand P. Upadhyay

Piyush K. Savla

Prakash M. Shinde

Raj R. Makhija

वक्त सबको मिलता है जिन्दगी बदलने के लिए, पर जिन्दगी दोबारा नहीं मिलती वक्त बदलने के लिए।

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - FIRST YEAR - MONDAY

Amita M. Naik

Anisha M. Soni

Gauri R. Vishwakarma

Hemantkumar H. Joshi

Hemlata H. Mudliar

Jyoti Y. Shah

Keval H. Shah

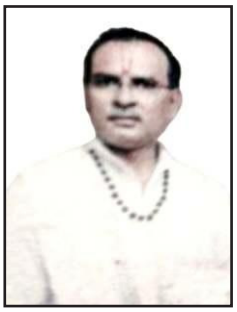

Rohit R. Pathak

Smita S. Mer

Viral B. Gandhi

हर इन्सान में कोई ना कोई प्रतिभा जरुर होती है, पर लोग अक्सर इसे दुसरे जैसा बनने में नष्ट कर देते है।

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT STUDENTS - SECOND YEAR - MONDAY

Amita D. Parekh

Bimal P. Rasputra

Chirag G. Savla

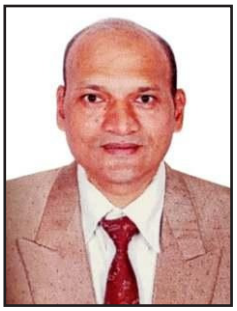
Harish M. Shah

Kavita R. Shah

Manish R. Dedhia

Manoj A. Mehta

Mayur M. Pathak

Neha M. Shah

Pooja M. Bhayani

Urvashi S. Gajjar

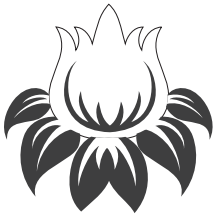

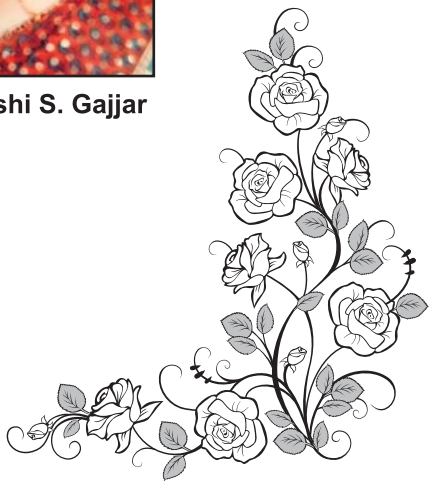

આત્મવિશ્વાસ, આત્મસન્માન અને આત્મસંયમ આ ત્રણ વસ્તુઓ જ જીવનને પરમ શક્તિ બનાવે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT PASS STUDENT - 2022

Aswini A. Prabhu

Bhavesh J. Nathwani

Bhavika R. Joshi

Bipin J. Rajgor

Dipika V. Panchal

Govardhan T. Kullai

Hetal M. Modi

Jigna J. Kapadiya

Manish R. Rawal

Mena G. Meria

Mital A. Kamdar

Mohit Singh

ત્રણ વાતને યાદ રાખશો નહિં - તમારૂં કો'કે કરેલું અપમાન, તમે કરેલો ઉપકાર અને બીજાના દુર્ગુણો.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

OUR ARDENT PASS STUDENT - 2022

Nayna H. Makwana

Nilesh J. Rupani

Nitin D. Dave

Reeta N. Mehta

Sandeep Neema

Sanjay A. Bhatt

Sarita P. Sharma

Sashikant P. Kurani

Shreya J. Shah

Unnati B. Shah

Yagnesh V. Shah

સ્વભાવથી જ જે અયોગ્ય હોય તેના પર સત્સંગની અસર થતી નથી.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

વૈદિક જ્યોતિષ સંસ્થાન (રજીસ્ટર્ડ)

રજી. પત્રવ્યવહારનું સરનામું :
૧૨૧/૪૪ ડી, વિશ્વકુંજ સોસાયટી, સેક્ટર ૧, ચારકોપ, કાંદીવલી (વેસ્ટ), મુંબઈ-૪૦૦ ૦૬૭.
મોબાઈલ : ૯૩૨૨૨૬૧૭૦૯ / ૭૦૪૫૪૭૦૬૬૧ • ઈમેલ : vjtvv1@gmail.com

જ્યોતિષના નિઃશુલ્ક વર્ગો

ગુજરાતી માધ્યમમાં હસ્તરેખા, જ્યોતિષ, વાસ્તુ અને સ્વરજ્ઞાનના વર્ગોમાં પ્રવેશ
જાન્યુઆરી થી બોરીવલી અને મલાડ ખાતે

ગુજરાતી અને હિન્દી

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિષ પ્રવેશ.**

૨. દ્વિતીય વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિર્ભૂષણ.**

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક વાસ્તુપ્રવેશ**

૧. **વૈદિક સ્વરજ્ઞાન જ્ઞાતા**

૧. પ્રથમ વર્ષ- **વૈદિક હસ્તરેખા વિજ્ઞાતા**

૩. તૃતિય વર્ષ- **વૈદિક જ્યોતિષમાર્તંડ**

૨. દ્વિતીય વર્ષ- **વૈદિક વાસ્તુભૂષણ**

૪. ચતુર્થ વર્ષ- **સ્વાધ્યાય**

નોંધ :
ભાષાનું જ્ઞાન ધરાવતા કોઈ પણ ઉમરના ભાઈઓ તથા બહેનો પ્રવેશ મેળવી શકે છે.

શાસ્ત્રમાં જ્ઞાન દાનને શ્રેષ્ઠ દાન કહેવાયું છે જે આ સંસ્થાનું એકમાત્ર ધ્યેય છે.

સાહસ ગયું તો સમજી લેવું કે માણસની અડધી સમજદારી પણ ગઈ.

We are grateful to the Trustees, Committee and Management of the following Institutions for permitting us to utilize their premises for conducting our classes.

1. **Sheth M.K.E.S. English High School, Malad (W)**
2. **Anandibai Kale Vidyalay, Borivali (W)**

We are grateful to the Newspaper and advertisers for their best co-operation and support.

- ★ **Janmabhoomi**
- ★ **Divya Bhaskar**
- ★ **Mumbai Samachar**
- ★ **Gujarat Samachar**
- ★ **Nav Bharat Times Hindi**

नक्षत्र ज्ञान माला

अश्विनि भरणी पद चार
कृतिका एक चरण है मेष ।
कृतिका तिन रोहिण्ये चार
दो पद मृग वृषभ विचार ।
मृग दो पद आर्द्रा चार
तिन पुर्नवसू मिथुन विचार ।
एक पुर्नवसू पूष्य श्लेष
जानिये कर्कट राशि विषेश ।
मधा पूर्वा उत्तरा पद एक
सिंह राशिका करो विवेक ।
उत्तरा तिन सकल पद हस्त
दो पद चित्रा कन्या जानो ।
दो पद चित्रा स्वाति चार
तिन विशाखा पद है तुल ।
एक विशाखा अनुराधा चार
ज्येष्ठा पूर्ण है वृश्चिक विचार ।
मूल पूर्वा उत्तरा पद एक
धनु राशिका करो विवेक ।
उत्तरा तिन श्रवण पद चार
दो धनिष्ठा मकर विभेद ।
दो धनिष्ठा शतभिष चार
पूर्वा तिन पद कुम्भं निर्धार ।
पूर्वा एक उत्तरा चार
सकल रेवति मीन विचार ।

तिथि दोहा

प्रतिपदा एकादशी षष्ठी नन्दा जान।
दूज सप्तमी द्वादशी भद्रा मान।
तृतीया अष्टमी त्रयोदशी जया जान।
चौदशी चौथ नवमी येतो है रिक्ता मान।
पंचदशी पंचमी तथा दशमी है पूर्णा मान।
सब तिथियोके नाम सम जानो फल परिणाम।

(ॐ) मंगला चरण (ॐ)

॥ श्रवण के आरंभ का मंगलाचरण ॥

ॐ सत्यं ज्ञानमनंतं यन्निष्कलं निष्क्रियं परम् ।
अद्वितीयं निर्विशेषं ब्रह्म तत्समुपास्महे ॥१॥

वह जो सत्यरुप, ज्ञानरुप, अनंत, प्राणादि कलाओसे रहित माया से रहित सूक्ष्म और व्यापक, द्वैत्य से रहित और नामादि विशेष से रहित ब्रह्म है, उनका हम अच्छी तरह से ध्यान करते हैं। (१)

शंकरं शंकाराचार्य केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्य कृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥२॥

विष्णुरुप भगवान व्यास और महेश्वररुप श्री शंकराचार्य जो ब्रह्मसूत्र के शारीरिक भाष्य के कर्ता है, वह ऐश्वर्यादिवाले दोनों को मैं बार बार नमन करता हूँ।(२)

अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाक्या।
चक्षुरुमीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥

अज्ञानरुप अंधकारसे अँधे बने हुए की अंत:करणरुप आँखे जिन्होंने अंजन की सलाई द्वारा खोली वह श्री गुरु को मेरे प्रणाम हो। (३)

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति,
द्वंदातितं गगनसदृश्यं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
ऐकं नित्यं विमलचलं सर्वधीसाक्षीभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुंतं नमामि ॥४॥

वह जो ब्रह्मरुप आनंदवाले, शिष्यों को परमसुख देनेवाले, अविद्या से रहित, ज्ञानरुप, सर्व द्वंद्वोसे पर, गगन जैसे निर्लेप वह आप है, इत्यादि महावाक्यों के लक्ष्यार्थरुप, एक तीनों कालमें रहनेवाले, सर्व प्रकार की अशुद्धि से रहित, चलायमान से रहित, सब प्राणीओं की बुद्धि के साक्षीरुप, छह प्रकार के भावविकारों से मुक्त एवम् तीन गुणो से रहित है, वह सद्गुरु को मैं वंदन करता हूँ।

समाप्ति मंगलाचरण

॥ श्रवण के समाप्ति का मंगलाचरण ॥

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥१॥

सत्यरुप आपको प्रणाम, जगत के कारणरुप आपको प्रणाम, ज्ञानस्वरुप और सर्व लोक के आश्रयरुप ऐसे आपको प्रणाम, अद्वैत तत्वरुप को मोक्ष देनेवाले को प्रणाम, व्यापक और शाश्वत ब्रह्म को प्रणाम। (१)

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वमेकंजगत्कर्तृपार्तृप्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥२॥

एक आप शरण ग्रहण करने योग्य हो, एक आप श्रेष्ठ हो, एक आप संसार को पालनेवाले तथा स्वयं प्रकाश हो, एक आप मायासे पर, अचल और सर्व विकल्पो से रहित हो।(२)

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणानां पावनं पावनानाम्।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं, परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥३॥

भय उत्पन्न करनेवालों के भयरुप, भयंकरों के बचकररुप, सर्व प्राणीओं की गतिरुप, पवित्र बनाने वालों को पवित्र बनाने वाले, एक आप उच्च पदो में रहनेवालों को नियम सें रखनेवाले, आकाशादि पर रहनेवालों से पर रहनेवाले और रक्षा करनेवालों की रक्षा करनेवाले हैं । (३)

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम् ॥४॥

श्रुति स्मृतिको पुराणों के रुप को और ध्याना के भी घररुप और लोगों का कल्याण करनेवाले, जिनके चरणों में अैश्वर्यादि रहे है ऐसे श्री शंकराचार्य को मै वंदन करता हूँ । (४)

वैदिक ज्योतिष संस्थान की १५ वी गुरुपूर्णिमा के अवसर पर स्वरज्ञान पर विशेष विचार

सृष्टीकी उत्पत्ती:- माहेश्वर के द्वारा ॐ कांर प्रणव के प्रचंड ध्वनि से आकास, आकास से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी ये पंचतत्वो से सारा त्रगुिणात्मक ब्रह्मांड बना पृथ्वी तत्वके पिंडो से सारे ग्रह नक्षत्रो तारो के विविध पिंड निर्माण हुए,

स्वर विद्या :- स्वर विद्या से हीन ज्योतिषी स्वामि से हीन घर जैसा तथा शास्त्रसे हीन मुख एवं शिरके बिना धड समान है। स्वरज्ञान से उत्तम धन, स्वरज्ञानसे उत्तम गुह्य, स्वरज्ञानसे उत्तम ज्ञान न देखा गया न सुना गया है। स्वरज्ञान में नाडीयाँ:- नाभिस्थान से ७२००० नाडीयाँ हमारे सारे शरीरमे फैली हुई है। जीनमे दस नाडीयाँ मुख्य नाडीयाँ शरीरके दस द्वारो से संबधीत होती है ईन दस नाडीयो में तीन प्रमुख नाडीयाँ जो इडा पिंगला तथा सुषम्णा नाम से जानी जाती है। बाकी की सात नाडीयाँ गांधारी, हस्तिजिह्वा, पूषा, यशस्विनी, अलंबुषा,कुहु, तथा शंखीनी नाम से जानी जाति है। इडा शरीरके बाये, पिंगला शरीर के दाहीने तथा सुषुम्णा शरीर के मध्यमें स्थित होती है। गांधारी बाये नेत्रमें हस्तिजिह्वा दाहीने नेत्रमें, पुषा बाये कानमें यशस्विनी दाहीने कानमें , अलंबुषा मुखमें, कुहु लींग-योनि स्थानमें तथा शंखीनी मलद्वार में कार्यरत रहती है।

स्वरज्ञान में प्राण तथा वायु:- प्राण पांच मुख्य तथा पांच उपप्राण होते है, प्राण,अपान, समान, उदान तथा व्यान अब उपप्राण नाग, कुर्म, कु×ल, देवदत्त तथा धनंजय। अब हम इन वायुओ के स्थान देखेंगे प्राण ह्रदयमें, अपान मलद्वारमें, समान नाभीके पीछे, उदान कंठमें, व्यान सारे शरीरमें व्याप्त रहता हे अब हम उपप्राण के स्थान देखेंगे नाग नाभीसे उपरी भागमें, कुर्म आंखोकी पलकोमें, कु×ल श्वसनतंत्रमें, देवदत्त कंठमें तथा धनंजय शरीर के पार्थीव परमाणुमें स्थीत रहता है।

इडा नाडीमें करने योग्य कार्य:-स्थिर कार्योमें, आभूषण खरीदनेमें, प्रवाशमें, धार्मिक कार्योमें, वस्तुओके संग्रहमें, वापी, कुवाँ,तालाब, देवता, स्थंभ आदिकी प्रतिष्ठा करनेमें, जलपान करनेमें, वस्त्र अलंकार धारण करनेमें, शांति कर्ममें, औषधि, रसायन स्वामि दर्शनमें, मित्रतामें, वाणिज्यमें, धान्य राशि जमां करनेमें, गृहप्रवेशमें, सौम्य कार्योमें, सेवा कार्यमें, बीज बोनेमें, मिलापमें, शुभ कार्यमें, विद्या आरंभमें, बंधुजनोसे मिलनेमें, धर्मदिक्षा लेनेमें, मंत्र साधनामें, चौपाये पशु घर लानेमें, चिकित्सामें, हाथी या घोडेकी सवारीमें, कर्ज लेनेमें, उपकार करते वक्त, खजानेकी स्थापनामें, गीत संगीत नृत्यकी साधनामें, ग्राम प्वेशमें, राज्याभिषेकमें, पीडा शोक विषाद आदिमें, योगाभ्यासमें, गुरु पूजनमें चंद्रनाडी शुभ होती है।

पिंगला नाडीमें करने योग्य कार्य:- कठीन क्रुरकार्य मारण मोहन स्थंभन वशीकरण उच्चाटनमें, मैथुनमें रतिमें भोगमें नौका गमनमें, वैरीओ से मिलनेमें, मदिरापानमें, शास्त्राभ्यासमें, शस्त्र अभ्यासमें, हवनादि कार्यमें, शस्त्रप्रयोगमें, हाथापाई, तकरारमें, खेत जोतनेमें, तिलक करनेमें, चर्चा विवादमें, शिकार खेलनेमें, पशुक्रय विक्रयमें, इट काष्ट पत्थर तथा रत्नोके कार्यमें, यंत्रो वाहनो पर्वत हाथी धोडा रथ तथा वाहनो की सवारी करनेमें, क्रोधमें, आयुध चलानेमें, युद्ध करनेमें, वैरीसे युद्धमें, विरोधिसे मिलनेमें, आक्रमण करने में, राजा से मुलाकातमें, भोजन के दरम्यान, क्रुरव्यहवारमें, स्नानादि कार्यमें, अग्निजन्य कार्योमें, किसीभी प्रकारका चर कर्म करनेमें पिंगला नाडी पूर्ण रुपसे कार्य करती है।

सुषुम्णा नाडीमें करने योग्य कार्य:- इडा से पिंगला या पिंगला से इडा स्वर परीवर्तन के दौरान कुछ क्षणोके लीए सुषुम्णा नाडी चलती है, यह नाडी गृहस्थो के किसीभी प्रश्नमें विपरीत या कार्यनाश या शुन्य परिणाम का फल देती है परंतु योगी साधको तथा सिद्धो के लीए यह वरदान रुप फल देती है यह नाडी सीधे ईस्वर से संपर्क करवाने वाली नाडी कही जाती है।

छायापुरुष साधन:- किसी एकांत स्थान में जाकर सूर्य पिठ तरफ हो ऐसे खडे रहकर अपनी ही छाया को एकटक देखते रहना है पुरा ध्यान छायाके कंठ पर केन्द्रीत करे मनमें 'ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमः" इस मंत्रका जाप करे कुछ देर पश्चात अपनी ही छायाको कंठसे द्रष्टी न हटाते छायाको स्वच्छ आकाश कर देखें साक्षात अपना ही विराट स्वरुप दीखाई पडेगां स्फटीक जैसा स्वच्छ चमकता हुवाँ अब मनमें 'अगम निगम कि खबर लगाये सोहं पारब्रह्म को नमस्कार" इस मंत्रका जाप करे ऐसा नित्य साधना करने पर साधकको मनमें उठे हुवे सभी प्रश्नोके जवाब मिलने लगते है, यदी छाया पीली दीखें तो रोग, लाल देखें तो भय, नीला देखें तो हत्या, अनेक प्रकारके रंग दीखें तो घोरउद्वेग, यदी छाया काली दीखे तो छः महीने में मृत्यु जाने, छाया के पैर टखना तथा पेट ना दीखने से क्रमसे छः महीने, वर्षमें तथा दो वर्षमें मृत्यु के संकेत, छायाका दाहिना हाथ न दीखनेसे भाईकी बाया हाथ न दीखनेसे पत्नी की मृत्यु, कंधा न दीखे तो आठ दिन में मृत्यु शिर न दीखनेसे मृत्यु, पूर्ण छाया न दीखे तो तत्काल मृत्यु जाने उपरोक्त सारी बाते तथा ज्ञान योगियोको ही होता है अन्यो नही।

संकलन
आचार्य अशोकजी

के. पी. प्रश्न ज्योतिष का सरलतम सिद्धान्त

इस सिद्धांत में जातक द्वारा प्रस्तावित प्रश्न ज्योतिष संख्या (होररी संख्या) से निर्देशित राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप नक्षत्र स्वामी (उपपति) की तुलना जातक के शासक ग्रहों से करते है। शासक ग्रह निम्नलिखित तरीके से निकाल से बने है :-

१) जातक का लग्न राशि स्वामी

२) जातक का लग्न बिंदु का नक्षत्र स्वामी

३) जातक का चन्द्र राशि का नक्षत्र स्वामी

४) जातक के दिन का स्वामी

सभी "हा" या "नही" प्रश्नों का निम्नलिखित नियमों को प्रयोग करके उत्तर जान सकते है।

पहला नियम : अगर प्रश्नकर्ता द्वारा दिया गया प्रश्न ज्योतिष संख्या (होररी संख्या) से निर्देशित उपपति और चन्द्र का नक्षत्र स्वामी या लग्न के नक्षत्र स्वामी एक ही है तब प्रश्न का उत्तर हाँ है या नहीं।

दूसरा नियम : अगर उपरोक्त नियम से उत्तर नहीं मिलता है तो इस नियम का प्रयोग करते है।

अगर होररी संख्या द्वारा निर्देशित राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी या उपपति शासक ग्रहों में उपस्थित हैं तब प्रश्न का उत्तर हाँ है अन्यथा नहीं ।

KP Sub Lord Table

Horary Numbers										Sub Lord
1		18	27	35	43	51	59	68	76	Kethu
2	10		28	36	44	52	60	69	77	Venus
3	11	19		37	45	53	61	70	78	Sun
4	12	20	29		46	54	62/63	71	79	Moon
5	13	21	30	38		55	64	72	80	Mars
6	14	22/23	31	39	47		65	73	81	Rahu
7	15	24	32	40	48	56		74	82	Jupiter
8	16	25	33	41	49	57	66		83	Saturn
9	17	26	34	42	50	58	67	75		Mercury
84		101	110	118	126	134	142	151	159	Kethu
85	93		111	119	127	135	143	152	160	Venus
86	94	102		120	128	136	144	153	161	Sun
87	95	103	112		129	137	145/146	154	162	Moon
88	96	104	113	121		138	147	155	163	Mars
89	97	105/106	114	122	130		148	156	164	Rahu
90	98	107	115	123	131	139		157	165	Jupiter
91	99	108	116	124	132	140	149		166	Saturn
92	100	109	117	125	133	141	150	158		Mercury
167		184	193	201	209	217	225	234	242	Kethu
168	176		194	202	210	218	226	235	243	Venus
169	177	185		203	211	219	227	236	244	Sun
170	178	186	195		212	220	228/229	237	245	Moon
171	179	187	196	204		221	230	238	246	Mars
172	180	188/189	197	205	213		231	239	247	Rahu
173	181	190	198	206	214	222		240	248	Jupiter
174	182	191	199	207	215	223	232		249	Saturn
175	183	192	200	208	216	224	233	241		Mercury

Siddhayogi Sivadasanravi

Sign Lord & Star Lord Table					
From	To	Sign Lord	Star Lord	Sub-Lord Numbers	
Deg:Min:Sec	Deg:Min:Sec			From	To
0:00:00	13:20:00	Mars	Kethu	1	9
13:20:00	26:40:00	Mars	Venus	10	18
26:40:00	30:00:00	Mars	Sun	19	22
30:00:00	40:00:00	Venus	Sun	23	28
40:00:00	53:20:00	Venus	Moon	29	37
53:20:00	60:00:00	Venus	Mars	38	41
60:00:00	66:40:00	Mercury	Mars	42	46
66:40:00	80:00:00	Mercury	Rahu	47	55
80:00:00	90:00:00	Mercury	Jupiter	56	62
90:00:00	93:20:00	Moon	Jupiter	63	65
93:20:00	106:40:00	Moon	Saturn	66	74
106:40:00	120:00:00	Moon	Mercury	75	83
120:00:00	133:20:00	Sun	Kethu	84	92
133:20:00	146:40:00	Sun	Venus	93	101
146:40:00	150:00:00	Sun	Sun	102	105
150:00:00	160:00:00	Mercury	Sun	106	111
160:00:00	173:20:00	Mercury	Moon	112	120
173:20:00	180:00:00	Mercury	Mars	121	124
180:00:00	186:40:00	Venus	Mars	125	129
186:40:00	200:00:00	Venus	Rahu	130	138
200:00:00	210:00:00	Venus	Jupiter	139	145
210:00:00	213:20:00	Mars	Jupiter	146	148
213:20:00	226:40:00	Mars	Saturn	149	157
226:40:00	240:00:00	Mars	Mercury	158	166
240:00:00	253:20:00	Jupiter	Kethu	167	175
253:20:00	266:40:00	Jupiter	Venus	176	184
266:40:00	270:00:00	Jupiter	Sun	185	188
270:00:00	280:00:00	Saturn	Sun	189	194
280:00:00	293:20:00	Saturn	Moon	195	203
293:20:00	300:00:00	Saturn	Mars	204	207
300:00:00	306:40:00	Saturn	Mars	208	212
306:40:00	320:00:00	Saturn	Rahu	213	221
320:00:00	330:00:00	Saturn	Jupiter	222	228
330:00:00	333:20:00	Jupiter	Jupiter	229	231
333:20:00	346:40:00	Jupiter	Saturn	232	240
346:40:00	360:00:00	Jupiter	Mercury	241	

संकलन

विकास मिश्रा

अष्टकवर्ग पर विवेचन

ज्योतिष में फल कथन करने के बहुत से नियम व योग है। जन्म कुण्डली की विवेचना में अष्टकवर्ग को भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।

अ-वर्ग सात ग्रहो तथा लग्न कर आठ समुदाय से प्राप्त अंको का योग है। जिसे हम "समुदाय अष्टकवर्ग" कहते है। अ-वर्ग गणना करते वक्त ♈♌ को नही लिया जाता ।

अष्टकवर्ग की गणना

७ ग्रहो सूर्य से शनि तथा लग्न अपने स्थान से निश्चित भावों को बिंदु प्रदान करते है जिससे इन ८ समुदाय से प्राप्त बिंदु प्रत्येक १२ भावों को मिलते है - इन्ही सब प्राप्त बिंदुओ से हम प्रत्येक भावों में अलग-अलग अंक प्राप्त करते है।

अष्टकवर्ग के महत्वपुर्ण सुत्र

१) जिस ग्रह - भावों के पास अधिक बिंदु होते है वह उतने ही शुभ फल प्रदान करते हैं - कम् बिंदु अशुभ फल को दर्शाता है।

२) भिन्नाष्टक वर्ग में बिंदु के फल

० - ३	→	निर्बल फल
४ -	→	सामान्य फल
४	→	बलवान माना जाता है।

३) स्वादिष्टक अ-वर्ग - बिंदु

२१ से कम	-	निर्बल
२४-२५	-	सामान्य
२६		बलवान
३०		अधिक बलवान

४) ग्रहों का गोचर जब जब जिन भावो से भ्रमण करते हैं तब उपर दिये बिंदु के अंक व बल से शुभ-अशुभ फल निर्धारण कर सकते हैं।

अ-वर्ग से फलकथन को कैसे समझे (सरल कोशिश)

जातक की जन्म कुण्डली

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
राशी	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	३	५
सर्वाष्टक बिंदु	३०	३२	३४	४२	१७	३१	२४	२५	२७	२८	२७	२१

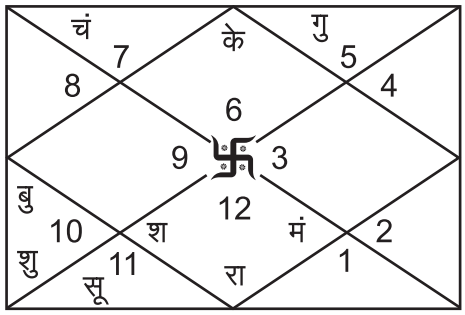

जातक का जन्म : कन्या लग्न
जातक की राशि : तुला
(जीवन के अच्छे बुरे पडाव को समझे)
१) साडे साती
२) उतार चढाव

१) शनि का गोचर व साडे साती

साडे साती अर्थात जन्म के चंद्र से १२, १,२ - भाव से शनि का गोचर उसे साडे साती कहते हैं। अक्सर समझा जाता है कि शनि की साडे साती बुरे परिणाम देती है पर ऐसा नही हैं। उपर दी हुई कुण्डली जब के - १ भाव में था तब साडे साती शुरु हुई - अंक ३० के कारण जातक को कुछ बुरे परिणाम नही हुए बल्कि जब शनि अपने अंतिम पडाव वृषचिक राशि में था - तब - ३ भाव में ३४ - बिंदु के कारण जातक को पराक्रम की वजह से अपने छोटे भाई से लाभ हुआ - भाग्य उदय हुआ - ७ दृष्टि ९ भाव पर पडने से ।

२)जीवन के उतार चढ़ाव

चतुर्थ भाव में ४१ बिंदु - धनु राशी व ५ भाव में १७ बिंदु जब गुरु का गोचर धनु में था तब - सुखो का भंडार खुल गया, जातक को जमीन, गाडी, घर सभी चीजो का सुख प्राप्त हुआ पर जब गुरु पंचम भाव में आये तब अचानक - शेयर बाजार में नुकसान के कारण सारे सुखों में कमी आ गई - घर बेचना पडा और भाड़े के घर में रहने की नौबत आ गयी ।

अष्टवर्ग के बिंदु से भाव व ग्रहो के बल - वह जन्म से लेकर मृत्यु के कई पडावो का फल कथन अच्छी तरह से कर सकते है जैसे धन, कुटुंब, सुख, पढाई, रोग, जया -Marriage सुख, Profession कर्म - मृत्यु तुल्य कष्ट व भाग्य दर्शाता है।

संकलन
हिमांशु आर ओझा

शेयर बाजारका तेजी - मंदी योग

तेजी (१) शनि, राहू, केतु जब तेजी कारक १,२,५,८,१० राशि में आये तो तेजी । शनि के इन राशि में आने से दीर्घ कालीन तेजी । यदि तेज राशियों में पाप प्रभाव अधिक हो तो भयंकर तेजी । मंगल का इन राशियों में भ्रमण कुछ समय के लिए तेजी लाता है।

(२) वक्री शनि दक्षिण पूर्व में उथल पुथल देता है। तुला राशि में वक्री शनि से दो माह तक तेजी रहती है।

(३) मीन राशि में शनि हो तथा गुरु वक्री हो या शुक्र-शनि संबंध बनाये ।

(४) शनि तथा वक्री गुरुका संबंध १-५.८.१० आदि राशि में हो ।

(५) शनि यदि ५.६-१० राशि में अस्त हो ।

(६) कन्या राशि में शनि उदित हो तो ।

(७) वृष राशि का मंगल ।

(८) कन्या राशि में सूर्य ।

(९) ८,९,१० राशि का शुक्र ।

(१०) सिंह राशि में बुध मार्गी हो तो शेयर में मंदि होकर तेजी ।

(११) मिथुन राशि का वक्री शुक्र ।

(१२) यदि पंचक सूर्योदय से ४५ घटी बाद आरंभ हो तथा इसी प्रकार इसकी समाप्ति हो तो एक माह तक तेजी ।

(१३) बुध, गरु, शनि, अस्त हो तो ।

(१४) पंचक के दिनो में यदि व्यतियात या वैधृति योग हो तो ।

(१५) मेष या वृश्यिक की संक्राति हो तथा वह १५ मूहूर्ती हो तथा गोचर में सूर्य - शनि की युति हो ।

(१६) कुंभ राशि का शनि यदि तेजी कारक १-२-५-८-१० नवांश में हो तो बाजार गरम रहेगा। ऐसे में यदि पाप ग्रह का योग बढ जाता है तो बाजार और तेज हो जाता है।

(१७) कुंभ राशि का शनि १०° से २१° तक बहुत तेजी देता है।

(१८) क्रुर ग्रह वक्री होकर युति या द्रस्टि संबंध करे ।

(१९) मंगल, शनि, मीन राशि में हो जब भी इनमें से कोई ग्रह इस राशि में प्रवेश करता है तो तेजी । ऐसे में किसी वक्री ग्रह का योग बन बैठे तो सोने पे सुहागा ।

(२०) हर्षले व नेप्चून की युति भी तेजी कारक । यह युति मकर या अन्य तेजी कारक १-२-५-८ राशि में हो तो।

(२१) शनि व राहू में ५° का अंतर रहने पर

(२२) जब किसी तेजी कारक ग्रहो सू.मं,श,रा,के,हर्षल, प्लुटो क्षीण मंदि, चंद्र पापी बुध में युति किसी तेजी कारक राशि १-२-५-८-१० में हो तो ऐसे में जब युति १° की हो तो पूर्ण तेजी । जैसे - जैसे यह दुरी बढ़ती जाती है तो मंदि उसी प्रकार आती है।

(२३) कृष्ण पक्ष की दशमी का क्षय होतो शेयर के मुल्य बढ़ते है।

मंदि (१) शनि की युति मंदि कारक ग्रहो गुरु, शुक्र, पूर्णचन्द्र अकेला बुध गुरु दीर्घ कालीन मंदि । शुक्र, बुध अल्पकालिन से मंदि कारक राशि ३,४,६,७,९,११,१२ मे होने से मंदि आती है।

(२) जब भी शनि मार्गी हो तो ।

(३) तुला राशि में वक्री शनि ।

(४) शनि गुरु, शनि-शुक्र, शनि-बुध की युति मंदि कारक होती है तथा यह युति कुंभ राशि में अवश्य मंदि लाती है।

(५) कुंभ राशि का शनि हो तथा शुक्र अस्त हो ।

(६) बुध, गुरु, शुक्र जब भी आपस में युति करे तब ।

(७) वृष राशि का शुक्र ।

(८) कन्या राशि में बुध, शुक्र की युति हो तथा धनु राशि में शनि हो ।

(९) मीन राशि में सूर्य, गुरु व शनि का योग ।

(१०) धनु राशि का शनि वक्री रहने पर पहले मंदि फिर तेजी तथा फिर मंदि ।

(११) पंचक के समय अधिकतम मंदि ही रहती है।

(१२) तुला राशि में गुरु मार्गी हो तो ।

(१३) धनु राशि का गुरु वक्री रहने से ।

(१४) मेष राशि में शनि के अस्त रहने से।

(१५) मिथुन राशि में शनि अस्त होतो भी घटा बढ़ी होती है।

(१६) बुध पश्चिम में अस्त हो तो।

(१७) कुंभ राशि में राहु शेयर बाजार में मंदि लाता है।

(१८) शुक्र यदि वृश्चिक राशि में हो तो बाजार में मंदि आती है परंतु इस मंदि के तुरंत बाद तेजी भी आती है।

(१९) कन्या, तुला राशि का सूर्य बाजार में मंदि लाता है बशर्ते इस पर अन्य ग्रहो का प्रभाव न हो ।

(२०) मंगल-राहु के एक राशि में रहने से मंदि आती है।

नोट : बुध की युति सूर्य के साथ होना अर्थात उदय या अस्त होना बाजार के लिये महत्वपूर्ण माना जाता है।

जब तेजी कारक ग्रह तेजी कारक राशि में आता है तो अपने अधिकार क्षेत्र में अनिवार्य शेयरो में तेजी लाता है। इसी प्रकार मंदि कारक में होता है।

अब प्रश्न यह है कि शनि तेजी कारक राशि में जब आयेगा तो क्या ३० महिना तेजी देगा ? नही ऐसा नही है इस तेजी मंदि को सूक्ष्मता से देखना होगा इसके लिये इसको नवमाश में बाटेंगे ३°, २०° प्रत्येक भाग करेंगे पहले दो नवमांशों में तेजी तीसरे, छठे, नवे में मंदि लाएगा।

तेजी	**मंदि**
०°-६°४०'	६°४०' से १०°
१०°-१६°४०'	१६°४०' से २०°
२०°-२६°४०'	२६°४०' से ३०°

संकलन
Dr. Harilal Maalde
F.R.MP, G.R.M.P, S.B.M.
Dispensing Chemist
Pharmacist
Teletherapist

डिप्रेशन (अवसाद)
आधुनिक युग की देन

आज के व्यस्त जीवन में कभी न कभी व्यक्ति डिप्रेशन का शिकर हो ही जाता है। डिप्रेशन आज इतना आम हो चुका है कि लोग इसकी तरफ ध्यान ही नही देते, जिसके परिणाम ठीक नही होते । डिप्रेशन को हताशा या नर्वस ब्रेक डाउन के तौर पर भी जाना जाता है।

डिप्रेशन (अवसाद) जैसे रोगो का केन्द्र बिन्दु मन होता है जो शरीर में बहुत ही सूक्ष्म रुप में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह शरीर में होने वाली सभी क्रियाओ को प्रभावित करता है जिससे छाती में दर्द आदि शारीरिक लक्षण प्रकट होते है।

डिप्रेशन मुख्य रुप से मस्तिस्क में रासायनिक स्त्राव के असंतुलन के कारण होता है। यह केवल मानसिक ही नही शारीरिक रोग भी है। इस रोग में मांसपेशिया सख्त हो उठती है और रोगी में बेचैनी अनावश्यक रुप से अंगो का हिलाना, कंधे उचकाना, किसी भी बात पर चिढचिढ़ाना, अकेले हसना या बोलना, घबराना आदि लक्षण दिखाई देते है।

डिप्रेशन का एक रुप पेनिक डिप्रेशन साईफोसिस होता है, जिसे बाई पोलर इफेक्टिव डिसओर्डर भी कहा जाता है। जो वर्षो तक चलता है जिसका उपचार जटिल है। जब व्यक्ति डिप्रेशन के दौर से उभरता है तब वह पैनिया में चला जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति बहुत आत्मविश्वासी हो जाता है और बडी-बडी बाते करता है और अधिक जोश में आने से लडाई झगडे और मारपीट करने लगता है जबकि सिर्फ डिप्रेशन में व्यक्ति आलसी और किसी काम मे रुचि नही रखता।

डिप्रेशन रोगी को समय रहते किसी अच्छे डिप्रेशन विशेषज्ञ से ईलाज करवाना चाहिए । विशिष्ट स्थितियों में उपचार लंबा भी खिच सकता है। इसके लिए साइको थेरेपी, इलेक्ट्रो कन्वलसिव थेरेपी, व्यवहार चिकित्सा, योग चिकित्सा, ध्यान चिकित्सा आदि अनेक पद्दतिया सहायक हो सकती है।

इसके अतिरिक्त आत्मविश्वास को जगाने के लिए एवं रोग के उपचार के लिए कुछ और भी महत्वपूर्ण सुझाव इस प्रकार है :

सबसे पहले आशावादी बने, हर कठिन स्थिति में आशावादी दृष्टिकोण रखे। इसे ज्यो-ज्यो अपनाएगे, स्वयं ही प्रसन्न होते जाएगे, कभी खाली न बैठे, इससे कुविचार मन में आते है। जो भी काम ले उसे लगन से पुरा करें। इससे आत्मविश्वास का विकास होगा, व्यायाम करें, यह मस्तिस्क की रासायनिक प्रक्रियाओं को संतुलित करता है। व्यायाम किसी विशेषज्ञ की सलाह से करे। सिद्ध पुरुषो के प्रवचन सुने और उनकी शरण में जाए, डिप्रेशन दूर हो जाएगा हो सके तो अच्छा एवं मनोरंजक साहित्य पढे, जो डिप्रेशन दूर करने में सहायक हो ।

डिप्रेशन जिसका मुख्य कारण मस्तिस्क में रासायनिक स्त्राव का असंतुलन होना जिससे मांसपेशिया कमजोर, नर्वस सिस्टम शिथिल पड जाती है। ज्योतिषीय दृष्टिकोण से नर्वस सिस्टम और मानसिक रोगो के कारक ग्रह चन्द्र

और मानसिक रोगो के कारक ग्रह चन्द्र और बुध है। इसके अतिरिक्त लग्नेश और लग्न का दुस्प्रभावों में रहना। इसलिए यदि कुन्डली में चंद्र, बुध, लग्न, लग्नेश दुस्प्रभावों में होते है तो व्यक्ति विशेष डिप्रेशन जैसे मानसिक रोग से पीडित होता है।

विभिन्न लग्नो में डिप्रेशन

मेष लग्न : लग्न में बुध, चंद्र स्थित हो और राहु के प्रभाव में हो, लग्नेश मंगल चंद्र राशि में होकर शनि से युक्त या द्रष्ट होने पर डिप्रेशन जैसे मानसिक रोग से पीडित होता है।

वृष लग्न : लग्नेश षस्ट भाव में चन्द्र से युक्त हो, बुध सूर्य से अस्त, शनि एकादश और राहु पंचम भाव मे हो तो जातक को डिप्रेशन दशा, अंतरदशा में होता है।

मिथुन लग्न : चंद्र लग्न में मंगल से युक्त या द्रस्ट हो, बुध अस्त होकर चतुर्थ भाव में राहु-केतु से युक्त या प्रभाव में हो तो जातक को डिप्रेशन देता है।

कर्क लग्न : लग्नेश चंद्र राहु से युक्त होकर किसी भी भाव में हो बुध लग्न मे हो और शनि से द्रस्ट हो तो जातक को डिप्रेशन देता है।

सिंह लग्न : जातक का चंद्र अस्त हो और सूर्य राहु से युक्त या दृस्ट होकर कुंडली में कहीं भी हो तो जातक को डिप्रेशन देते है।

कन्या लग्न : चंद्र व शनि कुण्डली में कही भी इकट्ठे बुध व राहू से युक्त होकर षष्टक या अष्टम भाव में हो तो जातक को डिप्रेशन देते है।

तुला लग्न : गुरु लग्न में राहु से युक्त हो बुध एवं लग्नेश सूर्य संग अस्त हो तो जातक को डिप्रेशन देता है।

वृश्चिक लग्न : चंद्र लग्न में राहु या केतु से युक्त हो, मंगल व शनि से युक्त या द्रस्ट होकर कहीं भी हो और बुध षस्ठ या अस्टम भाव में हो तो जातक को डिप्रेशन देता है।

धनु लग्न : लग्नेश एवं चंद्र दोनो लग्न पंचम या नवम भाव में हो, बुध लग्न में राहु या केतु के प्रभाव में हो तो जातक को डिप्रेशन होता है।

मकर लग्न : बुध व चंद्र षस्ठ भाव में, राहु या केतु लग्न मे हो, गुरु से युक्त हो तो जातक को डिप्रेशन देता है।

कुंभ लग्न : चंद्र, गुरु षस्ठ, सप्तम या अष्टम भाव में हो, और लग्नेश शनि गुरु से पंचम या नवम भाव में हो तो डिप्रेशन आता है।

मीन लग्न : शुक्र या शनि चंद्र से युक्त लग्न मे हो, गुरु अस्त का हो, बुध राहु के प्रभाव में हो तो जातक को डिप्रेशन देता है।

नोट : उपरोक्त सभी योग अपनी दशा - अंतर्दशा एवं गोचर वे प्रतिकुल रहने से रोग देते हैं। इसके उपरांत रोग से राहत मिल जाती है।

संकलन
Dr. Harilal Maalde
F.R.MP, G.R.M.P, S.B.M.
Dispensing Chemist
Pharmacist
Teletherapist

	आध्यनाडी - वात रजोगुणी	मध्यनाडी - पित्त तमोगुणी	अंत्यनाडी - कफ सत्वगुणी
A+ve good LEADER SHIP	अश्वीनी १-४ पुनर्वसु १-२-३-४ हस्त २-४ उतरा फाल्गुनी ३-४ ज्येष्ठान मूल १-२ शतभिषा २ पूर्वभाद्रपदा २-४	भरणी १-२-४ मृगशिष १-४ पूर्वाफाल्गुनी १ पुज्य १-३, पूर्वाषाढा १-३ अनुराधा ४-२ धनीष्ठा १ उतराभाद्रपदा २	कृतिका २ श्रवण ४
A-ve Hard Working	शतभिषा २	पूर्वाषाढा ३ अनुराधा २	
B+ve Can Give-up Sacrifice for Others	अश्वीनी २-३ आद्रा २-३ ४ पुनर्वसु १-२ ३-४ उतराफाल्गुनी १-२ हस्त १-३ मूल ४,३ जयस्ठा २-४ शतभिषा ३-४ पूर्वभाद्रपदा ३	भरणी १-२ ३-४ पुस्य २ पूर्वा फाल्गुनी २-३ चित्रा १-२ ३-४ अनुराधा ३ पूर्वाषाढा २ धनीस्ठा २ उ. भा १-४	कृतीका १-२-३ रोहिणी १-३ आश्लेषा २-३ मघा १-२ स्वाती १-२-३ विशाखा १-२-३-४ उतराषाढा २-३ श्रवण २-३ रेवती १-३
B-ve Non flexible selfish sadistic Personality Disorder	अश्वीनी ४ पुनर्वसु २ उतराफाल्गुनी २ पूर्वा भाद्रपदा ४	पूर्वा फाल्गुनी २	रोहिणी २
O+ve Born to Help	पुनर्वसु १-२-३-४ आद्रा ४ उतराफाल्गुनी १-२-३ हस्त ३-४-१ जयेष्ठा १-२-३-४ मूल १-२-४ शतभिषा २ पूर्वभाद्रपदा १	चित्रा १-२-३-४ भरणी १-२-३ मृगशिष ३ पूर्वा फाल्गुनी २-३ धनीष्ठा ३-४ अनुराधा १ उतराभाद्रपदा २-३ पूर्वाप्तठा ३-४	रोहिणी १-३-४ कृतीका ४ आश्लेषा १-४ मघा २-३ विशाखा २-१ स्वाती २-३-४ उतराषाढा २ श्रवण २,३ रेवती १-२-३-४
O-ve Narrow Minded	अश्वीनी २ आद्रा २ उतराफाल्गुनी १	धनीष्ठा २	रोहिणी ३ रेवती ४ आश्लेषा

NOTE : EMM-Ve ISBT042 (Golden Blood) लालरक्त नही होता, कोशिकाओं में अेन्टीजन नही मिलता।

	आध्यनाडी - वात	मध्यनाडी - पित्त	अंत्यनाडी - कफ
AB+ve Very difficult to Understand	अश्वीनी १-३-४ उ.फा. २ आद्रा १ हस्त ४ पुर्वाभाद्रपदा १ शतभिषा २	पुज्य ४ चित्रा २ पूर्वाषाढा २ अनुराधा ३ धनीष्ठा ३	रोहिणी ३ मघा ४ उतराषाढा ४ रेवती ४
AB-ve SHARP Intelligent	शतभिषा ३		

	MATCH MAKING	**Importance of Blood Group**
	MALE	FEMALE
1) 2) 3) 4) 5) 6)	A B O AB RH+ve COMMON BLOOD TYPE RH-ve	A & AB B & AB A,B,O,AB AB RH+ve RH+ve, RH-VE

	DO NOT MATCH IN MATCH MAKING	
	MALE	FEMALE
1) 2) 3) 4)	A B AB RH+ve	B, O A, O A,B,O RH-VE

TYPE	**You can give Blood to**	**You can receive Blood from**
A+ve	A+, AB+	A+, A-ve, O+ve, O-ve
A-ve	A+, A-, AB+, AB-	A-ve, O-ve
B+ve	B+, AB+	B+, B-, O+, O-
B-ve	B+, B-, AB+, AB-	B-, O-
O+ve	O+, A+, B+, AB+	O+, O-
O-ve	Every one	O-
AB+ve	AB+ve	Every one
AB-ve	AB+, AB-	A-, B-, O-, AB-

संकलन
Dr. Harilal Maalde
F.R.MP, G.R.M.P, S.B.M.
Dispensing Chemist
Pharmacist
Teletherapist

ज्योतीष में गृह योग

भाग्य में खुद का घर होगा की नहीं ? उसको जन्म कुंडली नवमांश कुंडली ओर षोडशांश कुंडली से जान सकते हैं | रोटी कपड़ा और मकान हर व्यक्ती की जरूरत हैं | दुनिया में कही भी जाए पर घर हमेशा याद आता हैं दुनिया में हर व्यक्ती के भाग्य में घर का सुख होगा की नही यह प्रश्न हमेशा सताता रहता हैं |

चतुर्थ स्थान स्थावर मिलकत का होता हैं, इसलिए इसका घर से सीधा संबंध हैं | चौथे स्थान में कोनसी राशी हैं ? चौथे स्थानमें बैठा ग्रह शुभ या अशुभ ? बलवान या बलहीन ? चौथे स्थान पर दृष्टी करने वाला ग्रह शुभ हैं या अशुभ ? बलवान हैं या बलहीन यह सोच कर, चतुर्थेश कोनसे स्थान में हैं ? कोनसी राशी में हैं ? चतुर्थेश पर किसकी दृष्टी हैं ? यह देखे चौथे स्थान मे मिलकत का कारक ग्रह देखें ? मंगल मिलकत का कारक हैं, उसपर खास ध्यान देना हैं | मंगल को भूमी पुत्र कहा गया हैं | शनी का भी जमीनसे संबंध हैं | यहाँ शनी को भी देखना जरूरी हैं | संयुक्त और वैभवी मकान के लीऐ शुक्र भी बलवान होना जारूरी है | घर की सुख शांती के लिए चंद्र बलवान होना जरूरी हैं | चंद्र निर्बल होने से घर तो होगा पर घर में शांती नहीं होगी |

कोई भी कुंडली का बल नवांश कुंडली से नक्की होता हैं, जन्म कुंडली का चतुर्थेश और चौथे स्थान से संबंधित ग्रह और चौथे स्थान का कारक ग्रह नवांश कुंडली में कितना बलवान हैं ? कोनसे स्थान में हैं ? यह देखना जरूरी हैं |

स्थावर मिलकत के लिए षोडशांश कुंडली भी बहुत जरूरी हैं | ईसे देखे बिना घर की खरीदी के बारे मे नही सोचना | षोडशांश कुंडली के लग्न को देख कर, जन्म कुंडली के चतुर्थेश और मिलकत, घर, सुख का कारक ग्रह षोडशांश कुंडली मे कहाँ हैं ? यह ध्यान से देखें |

लग्न कुंडली, नवांश कुंडली और षोडशांश कुंडली के अभ्यास के बाद में घर का निर्णय करें | यह तीन कुंडलीओ में चतुर्थ स्थान चतुर्देथ और कारक ग्रह बलवान हो उस जातक के नाम का मकान खरीदें |

॥ हरी ओम ॥

- संकलन
नीतीन भट्ट

जैमिनी शास्त्र - आरूढ़ पद

महर्षि पाराशर और महर्षि जैमिनी ये दो ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिन्होने फलित ज्योतिष के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया हैं। महर्षि जैमिनी ऋषि ने अपने ग्रंथ में सूत्रो के रूप में फलित सिद्धांतो को समझाया हैं। इसलिए जैमिनी शास्त्र " सूत्रों का शास्त्र " के रूप से भी जाना जाता हैं।

जैमिनी ज्योतिष शास्त्र में फल को सुक्ष्म रूप से जानने के लिए 'आरूढ़ लग्न ' की व्यवस्था बाताई गई हैं। जैमिनी शास्त्र की यह एक महत्त्वपूर्ण विशिष्ट रचना है। आरूढ़ लग्न द्वारा जातक का व्यक्तित्व, पद, व्यवसाय, जीवनसाथी, सहोदर, स्वास्थ्य व स्वभाव इत्यादि कई बातों को देख सकते हैं। जातक की सामाजिक प्रतिष्ठा कैसी हैं, लोग उसके बारे मे क्या सोचते हैं, उसकी धनसंपत्ति कितनी होगी, उसका भी ज्ञान होता हैं।

महर्षि जैमिनी ऋषि ने कुंडली को भलीभाँति समजकर सचोट व सुक्ष्म फलकथन किया जाये, इसलिए आरूढ़ पद की बेजोड पद्धति सुचित की है। न सिर्फ लग्न बल्कि किसी भी विशिष्ट भाव का फलकथन भी भाव मात्र का विचार न करके उस भाव के आरूढ़ पद का भी फलकथन में विचार करके सूक्ष्म फल करने को कहा है। संस्कृत शब्द आरूढ़ का अर्थ है, चढना या सवार होना और पद का अर्थ पाद या पैर (स्थान) एसा होता है। यावद्विशाश्रयपदभूजाणाम ॥२९॥ [२९(२९)] महर्षि जी अपने इस सूत्र से कहना चाहते है कि, लग्न या किसी भी भाव का स्वामी , उस भाव से जितने भाव दूर हो, वहा से उतने ही भाव तक आगे गिने। जहा गणना पूर्ण होती हो वहीं लग्न का भाव भाव का आरूढ़ पद माना जायेगा। यह एक सामान्य नियम हैं। उदाहरणार्थ **Dr.APJ Abdul Kalam** साहब की कुंडली देखेंगे। १५:१०:१९३१ ; ०१:१५:०० ; **Rameshwaram**

लग्न कुंडली

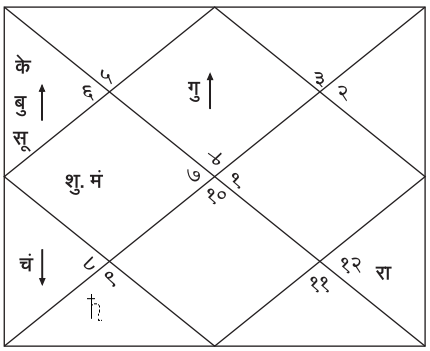

आरूढ़ लग्न कुंडली

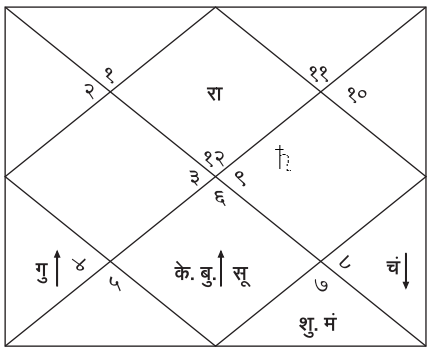

यहाँ कर्क लग्न, और लग्नेश चंद्र पांच भाव में स्थित है। वहाँ से पांच भाव आगे गिनने पर हमे कुंडली का नौवा भाव मिलता है। वहाँ 12 वी मीन राशि है। अर्थात इसकी आरूढ़ लग्न कुंडली मीन राशि की बनेगी। तथा जन्म के सूर्यादि सर्व ग्रह जन्म कुंडली की जिस राशि में हो उस हिसाब से ही रखेंगे।

इस सामान्य नियम के अलावा उन्होंने अपवाद रूप नियम भी दिए है -

स्वथे दारा :॥३०॥

जैमिनी शास्त्र में "कटपयादि चक्र" दिया गया है। जिसमे 'स्व' और चतुर्थ भाव का नाम है। व " दारा" सप्तम चर कारक है। अर्थात यदि भावेश अपने भाव से (स्व) चतुर्थ स्थान में हो, तो चतुर्थ से चतुर्थ यानि सप्तम भाव आरूढ़ पद न मान कर, यहाँ चतुर्थ ही आरूढ़ पद बनेगा।

सुतस्थे जन्म ॥३१॥

यहाँ सुत कटपयादि अनुसार सप्तम भाव हैं | भाव से भावेश अपने से सातवे भाव में हो, तो वहाँ से सात भाव आगे जाने पर हमे लग्न भाव प्राप्त होगा | इस में सप्तम का आरूढ़ पद लग्न भाव नहीं होगा, किन्तु दसवाँ भाव होगा |

लग्न से लग्नेश यदि चतुर्थ या सप्तम में स्व राशिगत स्थित हो तब भी उपरोक्त नियम लागू होंगे | हाँलाकी ऐसा सिर्फ द्विस्वभाव राशि लग्न में ही होगा, कि लग्न का स्वामी चतुर्थ में स्वग्रही हैं| या लग्न स्वामी सप्तम में स्व गृह स्थित हैं | क्योंकि इसके अलावा चर या स्थिर राशि लग्नों में ग्रहों की दूसरी राशि केंद्र में नही होती हैं | आसानी से समझने को हम निम्न कुंडलियों का अभ्यास करेंगे |

स्लगनेश बुध चतुर्थ में स्वगृही
चतुर्थ स्थान आरूढ़ पद होगा |

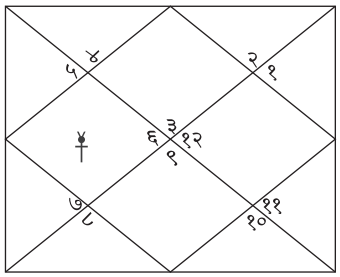

लग्नेश बुध लग्न में स्वगृही उसकी
दूसरी राशि १० वे में आरूढ़ पद होगा |

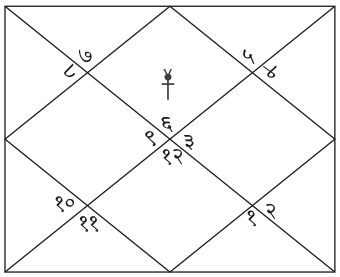

लग्नेश गुरु चतुर्थ में स्वगृही
चतुर्थ भाव ही आरूढ़ पद होगा |

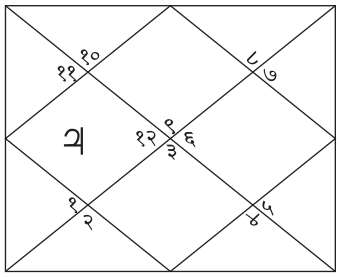

लग्नेश गुरु लग्न में स्वगृही उसकी
दूसरी राशि १० वे भाव में आरूढ़ पद होगा |

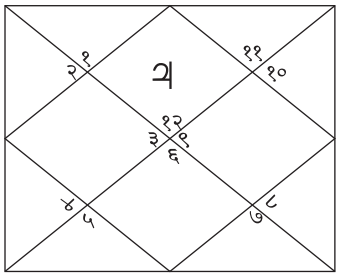

लग्नेश बुध ७ वे में, गुरु की राशि में; गुरु की
दूसरी राशि १० वे आरूढ़ पद मीन होगा |

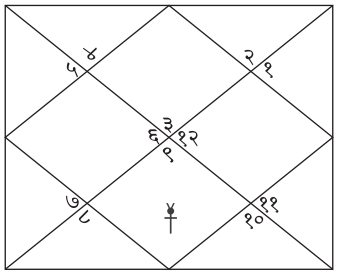

लग्नेश गुरु ७ वे में, बुध की राशि में; बुध की
दूसरी राशि चतुर्थ में आरूढ़ पद मिथुन होगा |

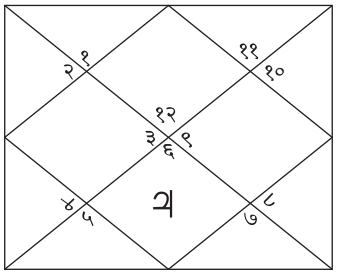

तदुपरांत, आरूढ़ लग्न की राशि अनुसार हमें जातक का व्यक्तित्व दिखाई देता हैं | जैसे की

आरूढ़ लग्न मेष - प्रभावशाली, निडर, साहसिक, (fearless) |
आरूढ़ लग्न वृषभ - चतुर, वित्तीय स्थिर (financial stable) |
आरूढ़ लग्न मिथुन - बातुनि, बचपना, आई.टी. विषेशज्ञ |
आरूढ़ लग्न कर्क - भावनात्मक व्यक्तिव |
आरूढ़ लग्न सिंह - राजवी, गतिशील व्यक्तिव |

आरूढ़ लग्न कन्या - वित्तीय विषेशज्ञ, संपति बचत का सलाहकार।

आरूढ़ लग्न तुला - सुंदर, कलाकार, सर्जक, व्याख्याता |

आरूढ़ लग्न वृश्चिक - गुसैल, बातो को मन में दबाए रखनेवाला |

आरूढ़ लग्न धनु - धर्म में रुचि, श्रद्धालू |

आरूढ़ लग्न मकर - व्यवसाय में गंभीरता (Career Oriented)

आरूढ़ लग्न कुंभ - सभ्य, समजिकता |

आरूढ़ लग्न मीन - संवेंदलशील, भावुक, अंत: स्फूर। अच्छी हो।

आरूढ़ लग्न से १ - ७ - १० वे भावों में सूर्यादि गृहों अनुसार फलकथन कुछ इस प्रकार किया जाता हैं |

सूर्य - परिवार के मुखिया, राजाशाही प्रभाव, राजा व राज्य का सुख, छोटी से छोटी खुशी भी सबके साथ पार्टी करके मानाते हैं।

चंद्र - अंतर ज्ञानी भावुक शांत स्वभाव

मंगल - इनके साथ कोई वाद विवाद करने से लोग डरते हैं | झूट सहन नही कर सकते |

बुध - वित्तीय सलाहकार, अपनी बात को सामने वालो को सरलता से समझाते हैं |

गुरु - श्रद्धालू, धार्मिक अच्छा सलाहकार |

शुक्र - भोग विलास पसंद हो। अच्छी महंगी और ब्रांडेड चीजों का शौकीन |

शनि - गंभीर, सरल, एकांत प्रिय |

राहु - प्रसिद्ध, इनको समझना आसान नहीं होता |

केतु - आध्यात्मिक, दानी, सबसे उखड़ा उखड़ा रहता हैं |

जन्म लग्न का बारहवाँ भाव जिस प्रकार व्यय / खर्च / नुकसानी / दर्शाता हैं। ठीक उसी प्रकार आरूढ़ लग्न से व्यय भाव को देखते हैं। आरूढ़ पद से बारहवें स्थान में स्तिथ राशि का स्वामी वहाँ से जितने स्थान की दूरी पर हो, वहाँ से ठीक उतने ही भाव आगे गिनने पर जो भाव मिलेगा उसे व्यय भाव का आरूढ़ पद माना जायेगा। जैमिनी शास्त्र में इसे "उपपद" कहा जाता हैं। प्रत्येक भाव का "उपपद" उसका व्यय दर्शाता हैं। जैसे आगे इनमे **Dr. APJ Abdul Kalam** की, जन्म कुंडली की आरूढ़ लग्न कुंडली बनाई हैं। उसी को देखें, तो मीन लग्न की आरूढ़ पद लग्न कुंडली में १२ वे भाव में कुंभ राशि हैं। जिसका राशि स्वामी शनि वहाँ से ११ वे भाव में (कुं. का दशम भाव) स्थित हैं। अब यहाँ से ११ वा भाव आगे की तरफ गिनती करने पर हमे आठवाँ भाव (तुला राशि) ज्ञात होता हैं। अर्थात आरूढ़ पद लग्न का उपपद तुला राशि आठवाँ भाव हैं। इसी तरह प्रत्येक भाव के आरूढ़ पद व उपपद जान सकते हैं।

जन्म लग्न

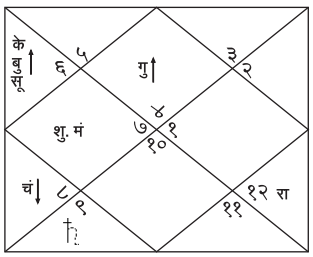

आरूढ़ लग्न

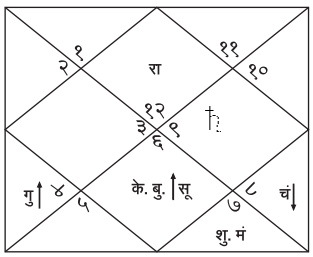

उपपद लग्न

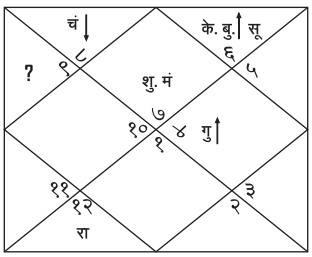

महर्षि जैमिनी ने जो संबध, घटनाएँ निरयन में देखने को कही है वे सभी संबध घटनाओं को आरूढ़ लग्न के द्वारा ही देखने को कहा है। इससे यह ज्ञात होता है, की ज्योतिषशास्त्र की जैमिनी पद्धति में जन्म लग्न का कोई विशेष महत्व नहीं है।

अस्तु

जैमिनी ज्योतिष जिज्ञासु
वर्षा धीरज रावल

।। श्री गणेशाय नमः।।

मुहुर्त शास्त्र

कुर्म शास्त्र

वास्तु शास्त्र मे हर शुभ कार्य के लिए मुहुर्त देखना आवश्यक है।
जिससे जातक को किए गये शुभकार्य का पुर्णतः शुभफल प्राप्त हो।

मुहुर्त शास्त्र के अनुसार जब कोई जातक अपना घर बनाता है तब उसे गृहारंभ के समय वृष-वास्तु चक्र, स्तंभ स्थापना मे कुमचक्र गृहप्रवेश के लिए कलश-चक्र इस तीन प्रकार के वास्तु चक्र को देखना आवश्यक है।
आईये आज हम घर निर्माण के समय पहले स्तंभ को स्थापित करने का मुहुर्त देखें। घर का पहला स्तंभ रखने के लिए मुहुर्त देखना आवश्यक है। इसके लिए हमे कुमचक्र का उपयोग करना है। जिस दिन का मुहुर्त लेना हो उस दिन की तिथी को ५ से गुणाकार करे, उसमे कृतिका नक्षत्र से गीनती करते मुहुर्त के दिन के नक्षत्र की संख्या को जोडे, जो संख्या मिले उसमे १२ को जोड़े, जो कुल संख्या मिले उसे ९ से भागाकार करें। जो शेष मिले उस संख्या का नीचे दि गई सारणी अनुसार फल देखे और स्तंभ स्थापन का दिन निश्चित करे।

शेष	कुंभ की जगह	फल
१,४,७	जल	लाभ
२,५,८	पृथ्वी	हानी
३,६,९,०	आकाश	मृत्यु

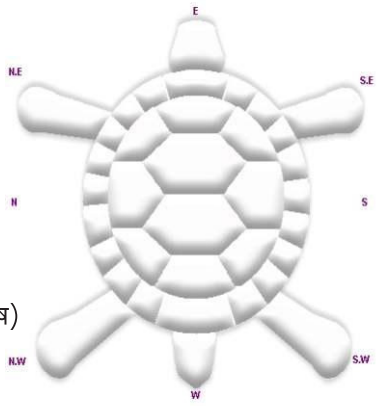

उ.दा. दिनांक २८-०८-२०२३ व्दादशी उत्तरा षाढा
१२ X ५= ६० + १९ = ७९ +१२=९१÷९=१(शेष)

१ संख्या मतलब कुंभ जल मे है।
इस दिन हम स्तंभ स्थापना कर सकते है।

कर्म चक्र के हरेक विभाग में आने वाले प्रदेशों के नाम

हरि ॐ अस्तु

संकलन
श्रीमती रुपल जे. दमणीया

हस्तरेखामें पर्वतोंका फल

हस्तरेखामें शुभ के परिक्षण के दौरान पहाड़ो का अध्ययन करते समय यह ज्ञात होता है कि गुरु, शनी, सुर्य और बुध पर्वत का उभार अधिकतम अपनी जगह (स्थान) पर न होकर दो उंगलियों के बीच मे होता है या फिर वह कीसी अन्य जगह भी हो सकता है। हस्तरेखा शास्त्र में पर्वतोंका विस्थापन या पर्वतो का अपनी जगह पर न होना कह सकते है।

हाथमें हर एक पहाड़ पर उपर के जैसा चिन्ह देखने को मिलता है। यह यदि पहाड़ के शिर्श पर हो तो जातक उस ग्रह प्रधान है, ऐसा कहा जाता है यदि यह चिन्ह अपनी जगह से अलग दिखे तो ग्रह का विस्थापन कहते है, अब हम हरएक पर्वत के विस्थापन के बारे में विस्तार से जानेंगे।

१) गुरु पर्वत : पर्वत की टोच यदी अपनी जगह पर यानी मध्यमें हो तो गुरु के अच्छे लक्षण जातक में प्रकट होंगे यानी जातक स्वाभीमानी होगा।

गुरु पर्वत की टोच शनि की तरफ झुकेगी तो जातक में शनी और गुरु दोनो के गुण देखने मीलेंगे जैसे थोडी स्वार्थवृत्ती, मंदबुध्दि, निस्तेज, ठहराव, धीरज, शांत अंकुश, मंदगति जैसे गुण गुरु में देखने मीलेंगे गुरुमे शनि की छाय दीखेंगी।

गुरु पर्वत की टोच हाथके बाहर की तरफ देखने मीली तो जातक अपने कार्य को सिध्द करेगा। उसमे अपने कुल, वर्ण, जाती, स्वदेश और राष्ट्र का अभिमान देखने मील सकता है।

गुरु पर्वत की टोच ह्रदय रेखा की तरफ हो तो जातक अधिक संवेदनशील और विध्याभास के प्रति लगाव ज्यादा होगा।

गुरु पर्वत की टोच मस्तक रेखा की तरफ हो तो जातकको बुध्दि प्रधान कार्य में सफलता मिलती है।

गुरु पर्वत की टोच उंगली तरफ हो तो उसको अपने परीवार, कुल के प्रति बहोत अभिमान होगा और जातक उनका ध्यान भी रखेंगे।

२) शनि पर्वत :

शनि पर्वत की टोच गुरु पर्वत की ओर हो तो जातक स्वाभीमानी होगा, शनि के मुलभुत लक्षण और गुरु का प्रभाव मिश्र तरीके से देखने मीलेंगे, गुरु की महत्वाकांक्षा में गंभीरता आयेगी। शनि की मंदता कम होगी। जातक सचेत और शंकाशील होगा। शनि पर्वत की टोच पर्वत के मध्यमें होगी तो शनि का प्रभाव अच्छी तरह उभरकर आयेगा जैसे गंभीरता, स्वार्थीपन, अंकुश, मंदगति।

शनि पर्वत की टोच सूर्य पर्वत की ओर होगी तो जातकके स्वभावमें सूर्य प्रेरीत फर्क देखने मिलेगा, जैसे उदासीनता, गंभीरपन, निराशावाद, विषादमय, करुणा, आरोग्य हानी देखने मिलेगी, सोच-समजकर कदम बढायेंगे लेकीन सूर्यके प्रभावसे जातक दुःखी नही होते।शनि पर्वत की टोच ह्रदयरेखा की और झुकी है तो जातकमें कठोरता, उदासी, लापरवाही, तिरस्कार की भावना देखने मिलती है। प्रेम में शंका रहती है। अनिर्णीत रहते है। शनी पर्वत की टोच उपर उंगली की तरफ हो तो जातक कंजुस और एकांतप्रिय बनता है।

३) सूर्य पर्वत :

सूर्य पर्वत की टोच बराबर मध्य में हो तो सूर्य के अच्छे गुण जातक में देखने मीलेंगे। सूर्य पर्वत की टोच शनि पर्वत की और हो तो सुर्य की तेजस्वीता में कमी आयेगी शनि की उदासीनता, निराशा, गंभीरता देखने मीलेगी जैसे की उदास शायर, उदास गाने वाले और प्रार्थना सभामें गाने वाले.

सूर्य पर्वत की टोच बुध पर्वत की ओर झुकती है तो बुध में सूर्य का सौन्दर्य झलकता है। बातचीत में राजसीपन देखने मीलता है। व्यापारमें सफलता मीलती है, व्यवहारिकता और दिर्घद्रष्टी रखने वाले।

सूर्य पर्वत की टोच उपर उंगली की ओर हो तो जातक कला में रुची रखने वाला होता है। सूर्य पर्वत की टोच यदी नीचे की ओर होतो (ह्रदयरेखा) जातक संवेदनशील होगा, दयालु होगा।

४) बुध पर्वतः

बुध पर्वत की टोच बराबर मध्यमें हो तो बुध से अच्छे लक्षण देखने मीलते है। जैसे व्यापार में सफलता, अच्छा वक्ता बन सकता है।

बुध पर्वत की टोच सूर्य पर्वत की ओर झुकती है तो अच्छी वकृत्वशक्ति, वाणी में कलात्मकता और विज्ञान के क्षेत्र में विस्तार पूर्वक अभ्यास करनेवाले होते है।

बुध पर्वत की टोच बुध की ओर हो तो जातक अच्छे व्यापारी, साहसिक और उतावलापन होता है। बुध पर्वत की टोच यदी नीचे की तरफ हो (ह्रदयरेखा) तो मुश्केलीयों का सामना करने की हिंमत आती है।

५) चंद्र पर्वत :

चंद्र पर्वत का झुकाव मंगल पर्वत की तरफ हो तो जातक संगीत प्रेमी होता है। अपनी कल्पना से नयी खोज करते है। चंद्रपर्वत मणीबंध की ओर झुकता है तो जातक कल्पनाशील शेखचल्ली बनता है। चंद्र पर्वत का झुकाव हथेली की तरफ हो तो जातक शंकाशील स्वभाव के होते है।

चंद्र पर्वत का विस्थापन हथेली की तरफ हो तो शंकाशिल स्वभाववाले होते है। कभी कभी अत्यंत क्रोधीत हो जाते है। शंकाशील और तरंगी होते है।

चंद्र पर्वत का विस्थापन शुक्र पर्वत की ओर हो तो व्यक्ति भावनाशील, कल्पनाशील होते है। लेकिन उनकी कल्पना विषयी होती है।

६) शुक्र पर्वत :

शुक्र पर्वत हथेली की तरफ झुकता दिखाई देता है तो जातक शुध्द चरीत्र वाला होता है। शुक्र पर्वत चंद्र की और झुकता हो तो जातक की कल्पना कामुक होती है उनमें विलास अंत्यधीक होती है। शुक्र पर्वत का झुकाव आयुष्य रेखा की तरफ हो तो जातक रुक्ष और अविवेकी होता है।

७) मंगल पर्वत (मंगल(१) उच्च का मंगल)

मंगल पर्वत का विस्थापन बाहरकी तरफ हो तो जातक बहादुर होता है।

मंगल पर्वत का विस्थापन हथेली की अंदरकी तरफ हो तो जातक आवेशयुक्त होता है।

मंगल पर्वत का विस्थापन चंद्र पर्वत की और हो तो जातक में तिव्र आकर्षण शक्ति होती है। जैसे हिप्नोटीझम

नीच का मंगल (मंगल(२))

मंगल पर्वत का विस्थापन शुक्र पर्वत की ओर होतो संवेदनशीलता के कारण माफ करने की वृत्ती होती है।

मंगल पर्वत का विस्थापन अंगुठे की तरफ होतो अपने आत्मबल के कारण छोडने की वृत्ती होती है।

-जयेश वाघेला

તા. ૧૦ - ૦૪-૨૦૨૩ ના એક વર્તમાન પત્ર માં જ્યોતિષ વિષે વક્ર-દ્રષ્ટી અને પૂર્વાગ્રહયુક્ત લેખ વાંચ્યો(લેખકનું નામ અપાયું ન હતું) એ લેખમાં વાહિયાત-તર્ક મંડિત જ્યોતિષ - વિધા પરત્વે પ્રશ્નો મૂકેલા. એ નો સાર આ પ્રમાણે છે, એના જવાબ અચૂક વાંચો.

૧) બે ગ્રહોનું રાસાયણિક તત્વ એક હોય તો એ ગ્રહો કુંડળિમાં બે-ચંદ્ર તરીકે જ્યોતિષીઓ મુકશે મંગળ - ચંદ્ર - બે ચંદ્ર !
૨) પૃથ્વી પર વરસમાં લાખો ટનના હિસાબે વરસોથી રજકણો પડે છે તો હજારો વરસ પહેલાંના ગ્રહો અને પૃથ્વી, જ્યોતિષીઓ કેવી રીતે મૂલવશે ?
૩) ધૂમકેતુ - ઉલ્કા ખરાબ અસર માવન જાતને કરે છે ? જ્યોતિષીયો એને કેવી રીતે મૂલવશે ?
૪) ધુમકેતુ જ જો માનવજાત પર ખરાબ અસર કરતો હોય તો એ સમયમાં યેશુ ભગવાન જન્મયા એનું શું ?
૫) કીડી - મંકોડાની કૂંડળી મૂકાશે ?
૬) મંગળ - ગુરૂ વચ્ચેના પટ્ટામા એસ્ટ્રોઈડ ધૂમે છે, એમનો કૂંડળીમાં સમાવેશ કેમ નહી ?
૭) આકાશગંગાને કૂંડલીમાં કેમ સ્થાન નહી ?
૮) ૨૭ નક્ષત્ર પૂંજો - સિવાયના બીજા ઝૂમખાંને કુંડળીમાં સ્થાન કેમ નહી ?
૯) આપણે ત્યા હર્ષલ- નેપચૂન - પ્લુટોનો શાસ્ત્રમાં ઉલ્લેખ નથી.
૧૦) જ્યોતિષમાં કોઈ સાયંટીફીક મીકેનીઝમ નથી.
૧૧)આત્મવિશ્વાસ - આવડતની વાત
૧૨)ફળાદેશ એક, પણ જાતક બીજા ક્ષેત્રમાં જાય.....
૧૩) જન્મ સમય બાબતે.....પ્રશ્નાર્થ !
૧૪) ગ્રહોની ઊચ્ચ - નીચ પ્રકાર બાબતે પ્રશ્ન
૧૫) અયનાંશ બાબતે .....પ્રશ્નો
૧૬) ધંધાદારી જ્યોતિષ અને સ્કોલર જ્યોતિષ વચ્ચે ભેદ

અભ્યાસુ જ્યોતિષીઓએ - આવા દેખીતી રીતે યોગ્ય પ્રશ્નોના જવાબ આપવા પડશે, મેં મારા અનુભવ, વાંચન મૂજબ જવાબ આપ્યા છે. કૃપા કરી ધ્યાનથી વાંચવા આગ્રહભરી વિનંતી છે.

૧) મંગળ અને ચંદ્ર બન્નેના બધાજ તત્વો અલગ છે, તે વૈજ્ઞાનિકોએ પણ પુરવાર કર્યું છે. જો માની લઈએ કે બન્ને ના દ્રવ્ય એક જ છે. પણ બન્ને ની અસર અને ઓળખ અલગ છે. ઉ. ઘંઉ અને મકાઈ બન્ને માં પ્રોટીન તત્વ રહ્યુ છે, પણ બન્ને ની અસર માનવ શરીરમાં અલગ છે. ઘંઉ તાસીરથી ગરમ અને મકાઈ વાયુકર્તા છે એટલે મંગળ અને ચંદ્રને બે ચંદ્રો લેબલ આપવુ બરાબર નથી એટલે કુંડળીમાં બે ચંદ્ર લખી ન શકાય.

૨) પૃથ્વી પર પડતાં રજકણોનુ વજન દર વરસે ૧૫ લાખ ટન લેખકે આપ્યું છે, એની ફોમ્યુંલા ગમે તે હોય, આગલી સદીના વૈજ્ઞાનિકો પણ સાબિત કરી શકયા નથી, પૃથ્વી પરનું ૭૫ ટકા પાણી રજકણો શોષી લે છે. અને એ જ પાણીમાથી વરાળ થઈ આકાશમાં કરોડો ટનના હિસાબે સ્થાનાંતર કરે છે - આમ પૃથ્વી પર વજનની સમતૂલા નથી ગોઠવાઈ ?

૩) ઉલ્કાપાતથી ખાબોચિયું સર્જાય એ ઠીક છે.....પણ ઉત્ક્રાંતીવાદ એમ તારણ કાઢે કે એનાથી ડાયનોસોર જેવાં મહાકાય જાનવર નષ્ટ થયાં પણ એની સાબિતીમાં કેટલે અંશે વિશ્વાસ કરવો, નાશ પામવાના અનેક કારણો હોઈ શકે છે.

૪) હીરો - વરશીપીંગ એ આદિ માવનથી ચાલી આવેલી બાબત છે. એટલે એ વખતે એમના સમ-વયસ્ક, યેશુના જન્મના આકાશની પેટર્નમાં નહિ જન્મ્યા હોય, જેમા થોડા વિલન, તામસી, રાક્ષસી પણ હશે જ.

૫) કીડા -મંકોડા - મચ્છરની કૂંડળી માંડવા બાબતે લેખક ઉપહાસની ભાષામાં વાત કરે છે. પણ આપણે ત્યા વિ-યોની જન્મના ગ્રહયોગના પ્રકરણો પહેલેથી છે જ (જાતક પારિજાત-અધ્યાય -૩) મંકોડા-મચ્છર આપણો સગો તો નથી પણ જો એનો જન્મ સગી-આંખે કોઈ (વૈજ્ઞાનિક-ખગોળવિદ) જોઈ શકે તો એની કૂંડળી પણ અચૂક માંડી શકાય.

૬) રાહુ-કેતુ એ પૃથ્વી ફરતે ચંદ્રના પાત અને પૃથ્વીના સૂર્ય-ફરતે પાત- આ બે રસ્તા જ્યાં કપાય એ બે બિંદુને રાહુ-કેતુનું બિરૂદ મળ્યું છે. મંગળ-ગુરૂ વચ્ચેના અવકાશે ઍસ્ટ્રોઈડ ગતિમાન છે, એના ફળાદેશ આધુનિક પશ્ચિમી જ્યોતિષમાં સાંપડે છે. અને એના પુસ્તકોમા પણ મળે છે.
(The Ulimate Asdtroide - by J. Lee Lehman, 1988)

૭) આકાશગંગા નું સ્થાન અફર જણાય છે એની આસપાસ સૂર્યમાળા ફરે છે. એ રીતે એનું સ્થાન રાશિચક્રમાં સાયન પ્રમાણે આજની તારીખે ધન રાશિના ૨૯ અંશ ૨૮ કળા ઉપર છે, નિરયનમાં ૪ અંશ ૪૯ કળા પર છે. આ ગેલેક્સી સૂર્ય (માળા) નું પિતાનું સ્થાન છે, કૂંડળીમાં એનુ સ્થાન મૂકી અર્થઘટન - સ્કોલર જ્યોતિષી જ કરી શકે.

૮)જ્યોતિષમાં આ તારકપુંજો બાર રાશિના વિભાજન પહેલાં પણ મોજુદ હતાં જ. કાળાંતરે શૉર્ટ કર્ટ (જેમ કે ભાષામાં શૉર્ટ હેન્ડ આવેલુ) હાથવગું લાગતું ગયું. આ માનવ સહજ વૃત્તિને લક્ષમાં લેવી પડે. જ્યોતિષશાસ્ત્ર ગ્રહના ભૌતિક - અસ્તિત્વની પેલે પારની વાત કરે છે એ ભૂલવું ન જોઈએ. ખગોળનું ગણિત ખરી પડે એ ક્ષણે જ્યોતિષીનું કાર્ય શરૂ થાય છે.

નવા ગ્રહો-ગેલક્સિઓ શોધાતી રહેશે એ બધાનું સ્થાન કાગળ પરની(ભોજપત્ર પરની) કૂંડળીમાં તો અદશ્ય રહ્યુ છે ને રહશે. પણ જે દશ્યમાન છે ને જીઓસાયન્ટીફીક (સૂર્યસિધ્દાંત) રેફરન્સ હેઠળ આવે છે. એ બાબત જ માનવજાત માટે મહત્વની ગણાય. બાકી કેમીસ્ટ્રીમાં નવાં કેમિકલો શોધાશે ને એનાં સમીકરણો પણ બદલાશે કે ઉમરાશે એમ જ્યોતિષમાં પણ અપડેશન કેમ નહિ થાય ?

અંકોમાં ૩ (બ્રહ્મા- વિષ્ણુ - મહેશ) અને ૯ (Higher octave of 3) સર્વોપરી, મહત્વના ગણાય છે. એના ગુણાંકમાં જ ગણિત અને ખગોળ (અને વેદિક ગણિત) છે. એમ જ્યોતિષમાં પણ રાશિ - ગ્રહોની સંખ્યા મુકરર થઈ છે.

હર્ષલ(ઈન્દ્ર, પ્રજાપતિ) - નેપચૂન (વરૂણ) - પ્લુટોનો (યમ) પશ્ચિમી ખગોળશાસ્ત્રીઓએ શોધ્યા છે જે વિદ્યાર્થીને કામમાં આવે પણ મહાભારત માં મહર્ષી વ્યાસે શ્વેત (નેપચ્યુન), શ્યામ (હર્ષલ) અને તીવ્ર (પ્લુટો) નો ઉલ્લેખ કર્યો જ છે. (લેઉરસી ના ગણિત પ્રમાણે ગણતાં ગ્રહસ્થિતિ મળતી આવે છે.

(Ref. : Dating Mahabharat by Dr. Padmakar Vishnu Vartak, Pune) પણ ઋષિઓને એમની ઓરબીટ ક્રાંતિવૃત્તથી ઊફરે હોવાનું માલુમ પડયું હોય અને એમને નવગ્રહો ઉપરાંત આમ જ ન કર્યા હોય એ સંભાવના પણ એટલી જ પ્રબળ છે. ધરતીકંપ જેવી કૂદરતી આફતો ગ્રહણ આ ત્રણ ગ્રહોને આધિન છે એ પૂર્વ-પશ્ચિમના જ્યોતિષીઓએ વારંવાર પૂરવાર કર્યું છે.

Iaian Mcgilchrist કહે છે : We have created a society that honors the servent (Rational - Left Mind) but has forgotten the gift (intuitive -mind-Right Brain).

૯) હર્ષલ(ઈન્દ્ર, પ્રજાપતિ) - નેપચૂન (વરૂણ) - પ્લુટોનો (યમ) આપણા પુરાણો અને શાસ્ત્રોમાં પણ ઉલ્લેખ છે.
૧૦) કેટલાક લોકો વિષયની ઊંડી જાણકારી ન હોવાથી એવી માન્યતા ધરાવે છે કે જ્યોતિષમાં કોઈ વૈજ્ઞાનિક સંરચના (Scienfitic Mechanisum) નથી. તો સાયન્સ વિષે પણ is lack of mechanism, justification for dismissing a phemomenon? દા. ત. Lodestone (કંપાસ) સફળતાથી બે સદીથી વપરાશમાં રહ્યો હોવા છતાં કોઈ વૈજ્ઞાનિક પૃથ્વીના ચુંબકત્વ ક્ષેત્ર ને વીસમી સદી સુધી સમજી શક્યો નહિ. આજે કોવિડ -૧૯ વખતે એને માનવજાત તો ઠીક પણ વૈજ્ઞાનિકો પણ ભૂલી ગયા ! !

૧૧) જ્યોતિષીય ફશકથન ક્યારેય ડીટરમીનીસ્ટીક હતું નહિ. કોઈ કહે કે કાલે તને મારૂતી કાર મળશે પણ સાયકલ મળે એવુ બને. ગ્રહયોગો નિર્દેશ કરે. અગાઉ ચોપગાં જાનવરો (હાથી-ઘોડા) વાહન ગણાતાં - અત્યારે કોઈ ડાહ્યો જ્યોતિષ હાથી મળશે એમ ભાખે નહિ. દેશ - કાળની પરીસ્થીતી ધ્યાનમાં રાખવાની બાબત ઋષિઓએ પહેલે થી જણાવી જ છે.

એક જ્યોતિષ એમ કહે કે તમારો દિકરો મોટરો - વાહનોથી ઘેરાયેલા રહેશે- જરૂરી નથી કે એ ફોર્ડ થાય, એ ટ્રાફિક પોલિસ પણ થઈ શકે. જ્યોતિષમાં સંકેતની ભાષા છે, વિજ્ઞાનને સંકેતિક ભાષાનો આભડછેડ હોય એમાં નવાઈ નથી.

૧૨) દરેકનું જેમ શારિરીક બંધારણ હોય એમ માનસિક બંધારણ પણ હોવાનું. નબળો વિશ્વાસ ગુમાવે અને સબળો અતિવિશ્વાસ ઘરાવે. બંને નિષ્ફળ જાય છે, એટલે આત્મવિશ્વાસ અને આવડત શબ્દો આખરે abstract terminology હેઠળ આવે છે.

ગ્રહો ડૉક્ટર (વિદ્યાભ્યાસ) મા યોગો નિર્દેશે પણ આજિવિકા કોઈ અન્ય ક્ષેત્રની હોઈ શકે. સારો જ્યોતિષી એની જાણકારી માતા-પિતાને અગાઉથી આપતો હોય છે, ડૉક્ટર ન થાય તો ઔષધિનો વિક્રેતા થઈ શકે.

The Humanist મેગેઝીન ચુએસે, એના સંપ્ટેંબર - આક્ટોબર ૧૯૭૫ ના અંકમાં ૧૮૬ વૈજ્ઞાનિકોની સહી સાથે બાર્ટ જે. બોક અને લારેન્સ ઈ. જેરોમ ના લેખો, જ્યોતિષશાસ્ત્રની વિરૂધ્ધ પ્રસિધ્ધ કરેલા. પછીથી પુરવાર થયેલું કે એમાંના મોટા ભાગના નોબેલ - લોરીયેટ હતા ને એમાંના કેટલાકે કબૂલેલું કે એમણે સહી કરી છે પણ એમણે જ્યોતિષનું કોઈ સંશોધન કર્યું નથી.

આ વૈજ્ઞાનિકોને જ્યોતિષશાસ્ત્રને વખોડવાનો કેમ વ્યાયામ કરવો પડયો એના જવાબમાં અમેરીકાના જગવિખ્યાત, સ્કોલર જ્યોતિષી રાબર્ટ સ્ટેન્ડ એ કહેલુ : I think that astrology threatens the conceptual struture through which they are accustomed to view the world. Astrology can't be right, for it, it were than the metaphysical Basis on which most scientits operate today would be wrong" (Essays on Astrology - by Robert Stand, 1982, P5) આગળ લખેલુ હતું.

૧૩) જન્મ સમય કયો સાચો એ વિવાદ ખગોળશાસ્ત્રીઓ કરતાં ગંભીર જ્યોતિષીયોને વધારે મૂંઝવે છે. સીઝેરિયન મૂહૂર્ત એ મેડીકલી-અર્જન્સી હેડળ ડૉક્ટરોને કરવુ પડતું હોય છે એટલે એ સમયે(કહોકે અઠવાડિક, માસિકના) આકાશની પેટર્ન કોના હાથમાં હોય જ્યોતિષી ગ્રહ-ગણિત કરે પણ આખરે સુપ્રીમ શક્તિ જ બાળકનું જન્મનક્ષત્ર અને લગ્ન નક્કી કરતી હોય છે. એમા બે મત નથી (આપેલા મુહુર્તમાં એનેસ્થેશિયા વાળો મોડો પડે, નર્સ હાજર ન થઈ હોય એવું બનતુ હોય છે) આમાં પ્રકૃતિની સામે પડકાર જોવાય નહિ પણ ઈશ્વરીય સત્તાનો સ્વીકાર જોવાય. જ્યોતિષ માત્ર યોગ્ય-પેટર્નનું ગણિત કરી આપે છે.

૧૪) ગ્રહોની ઉચ્ચ-નીચ ગુણવત્તા એ ખગોલીય બાબત નથી, પણ માનવજીવનના ઉચ્ચનીચ - પાસાનું એનાપર આરોપણ છે. મૃત-બાલ - વૃધ્ધ વગેરે ગ્રહોની અવસ્થાઓ પણ અમૂર્ત છે એ એક એકમ છે - વધારાનુ ટુલ છે, ક્યારેક કામ કરે, ક્યારેક ન પણ કરે... એવા અનુભવ છે...

૧૫) પ્રાચીન કાળે જ્યોતિષીય ગણિત ઘટી-પલ-ચર-ખંડ, ખંગુલ - વ્યંગુલ વગેરે સૂર્યપ્રકાશ હેઠળ વ્હેતનાં એકમથી થતાં હતાં, એમાં અયનાંશ નિહિત હતા. એમાં કોઈ બાદબાકી - સરવાળા નહોતા, આધુનિક કૂંડળી ગણિત પછી જ અયનાંશના વાદ-વિવાદ ચાલ્યા છે.

૧૬) ધંધાદારી અને અભ્યાસુ-જ્યોતિષ વચ્ચે ફરક કરવા પડે. કોરોના કાળમાં મેડિકલ દૂનિયાના કેટલાય વરવા કિસ્સાઓના આપણે સાક્ષી નથી બન્યા ? ડૉક્ટરોને ગાળ દેતા નથી ? જ્યોતિષી જ અડફેટે ચડે છે. કાળક્રમે શબ્દો - ટરમીનોલોજી બદલતા હોય છે. સારા જ્યોતિષની લાયકાત બાબતે ઋષિઓએ શરત મૂકેલી એના શ્લોક પ્રાપ્ત થાય છે.

અગાઉ જ્યોતિષ પર હુમલો કરનાર (પૂર્વ ગ્રહયુક્ત નહિ) પણ સૌ પ્રથમ ઈ.સ. ૧૪૯૩-૧૪૯૪ માં (Disputation aginst Divinatony Astrology)
Giovanni Pico della Mirandola હતા, આના વંશજો આજે મોજુદ છે.

અસહિષ્ણુતા એ માનવીય નબળાઈ છે. એક વિષયનો જ્ઞાતા ઘમંડમાં આવી બીજા વિષયના જ્ઞાતાને સમજ્યા વિના ઊતારી પાડવાનો વ્યર્થ ઉધમ કરતો હોય છે, એમાં એની જ નબળાઈ પડઘાતી હોય છે. મુળ વાત એ જ કે Symbolism is in the root of culture, art and the like disciplines. Symbols are taken from NATURE itself geometrically or otherwise...poymorphism, પ્રતિકો અને ચિન્હો એ જ્યોતિષનાં આધાર સ્તંભ છે. સૂફી તત્વજ્ઞાન કહે છે કેઃ Symbol is a theophany of the absolute in the relative, they tell us we can't invent symbols, only allow them to transform us. The symbol connects us to a qualitative life and has the capacity to imbue the simplest thing with meaning.
(Alice O Hovell - "Jungian symbolisum in astrology" USA, 1987 P.54)
Sceptics માટે Robert Hover એ કહેલુ : " Most debunkers of Astrology have hung a "Do Not DISTURB" sign on the door of their beliefs. If they were to examine astrology on it's own-terms, they would find that this part of the mysterious cosmic elephant helps define other parts" (Astrology considered ANS 2014, P.24.)

લેખક : ભીખુભાઈ ચૌહાણ (B. K. Chauhan)

जन्म कुंडली

लग्नं देहस्थ विज्ञानम् ।

लग्न कुंडली जातक के जीवन का आयना है। जातक का स्वभाव, स्वरुप, जीवन के सुख-दुख और बाकी के भौतिक गुणों को भी दर्शाता है।

जातक के लग्न की विशेषताए

लग्न : वृषभ	लग्नश : शुक्र
नक्षत्र - कृतिका (३)	नक्षत्र स्वामी - सूर्य
तत्व - पृथ्वी	स्वभाव - स्थिर
कारक ग्रह - चंद्र, गुरु	तटस्थ ग्रह - शुक्र
मारक ग्रह - मंगल, बुध,	बाधक ग्रह - शनी

सर्वाधिक योगकारक ग्रह - शनि

स्वभाव, प्रकृति और स्वरुप

स्थिर स्वभाव, पृथ्वी तत्व होने से जातक दृढ़ निश्चयी, व्यवहार कुशल, कुशाग्र बुद्धिवान हमेशा लोगो के मददगार और नेतृत्व करने की क्षमता वाला होगा ।

जातक का जन्म नक्षत्र - कृतिका - स्वामी सूर्य और चरण - ३ - मंगल द्वारा शासित है। जातक को बचपन से ही शिक्षा प्राप्त करने में अधिक रुचि, सब विषयों का ज्ञान, लक्ष्य प्राप्त करने की प्रबल इच्छा शक्ति और नेतृत्व करने की क्षमता होगी । मंगल द्वारा शासित कृतिका का ३ चरण जातक को साहसी और उर्जावान बनाता है।

जातक का न्यायपूर्ण और निष्पक्ष स्वभाव, उनको कानुन प्रर्वतक - वकील । जज । बेरिस्टर या सेना में काम कर के राष्ट्र का न्याय और कानुन व्यवस्था बनाने में मदद कर सकते है।

उनकी नेतृत्व शक्ति और ओजस वक्ता होने के कारण राजनिति, समाजसेवा और सरकारी क्षेत्रो में काम कर सकते है। स्वतंत्र विचार शैली और आत्मनिर्भरता के कारण जातक अपने जीवन संबंधित आसानी से निर्णय के सकते है।

वार्षिक निबंध स्पर्धा २०२३

जन्म / लग्न कुंडली

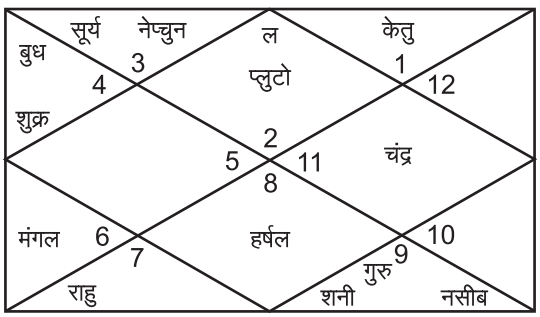

( ) - वक्री ग्रह
C - अस्त ग्रह

तारा चक्र - नक्षत्र स्वाती

	जन्म	संपत	विपत	अेम	प्रत्यरी	साधक	वद	मैत्री	अधिमैत्री
	शतभिषा	पू. भाद्रपद	उ. भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
	आद्रा	पुर्नवसु	पुज्य	आश्लेषा	मधा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षाढा	उ. षाढा	श्रवण	धनिष्ठा
महादशा	राहु	गुरु	शनी	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
भूपतवर्ष	२७.७.१९१७	२७.७.१९३३	२७.७.१९५२	२४.७.१९६९	२४.७.१९७६	२४.७.१९९६	२४.७.२००२	२४.७.२०१२	२४.७.२०१९

जातक को शनी के नक्षत्र के समय विपत्ति, मुश्केली - विपत्त तारा में आ सकती हैं। केतु के नक्षत्र (प्रत्यरी) के समय में अडचणे, विघ्न आ सकती है। कोई अशुभ बनाव बन सकते है।

सूर्य के नक्षत्र (वध) के समय में मृत्यु तुल्य कष्ट या मृत्यु हो सकता है।

बौधिक स्थिति

बुद्धि वे कारक ग्रह - बुध और गुरु है। जातक की कुंडली में बुध वक्री और अस्त है लेकिन वर्गोत्तम और पुष्कर नवांश में है जो बुध का बलि बनाते है। बुध पराक्रम भाव में मित्र चंद्र की कर्क राशि में और मित्र शुक्र के साथ युति में है जो जातक को तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छी यादशक्ति, ज्ञानवान, वाकचातुर्थ, रचनात्मक, अध्यापन और भाषा - वाणी पर प्रभुत्व देता है।

बुद्ध का नक्षत्रपति - गुरु होने से जातक अपनी योग्यता पर सरकारी क्षेत्र में उच्च पद हासिल कर सकते है। Academician / Educationist बन सकते है।

जातक मेधावी, सदाचारी जीवन में यश, किर्ती नाम कमाने वाले हो शकते है। उच्च प्रोफेशनल अभ्यास करने के लिये एक - दो बाहर देश भी जा सकते है।

महत्वकांक्षा और इच्छापूर्ति

जातक के लाभ भाव (११ भाव) से जातक की महत्वकांक्षा और इच्छापूर्ति देख सकते है। कारक ग्रह - गुरु और शुक्र राशि - मीन (गुरु) लाभ भाव के मीन राशि स्वामी - गुरु अपनी मूल त्रिकोण राशि धनु में है। गुरु की राशि में और मित्र बुध के साथ स्थित है। तो गुरु और शुक्र दोनों बली होने के कारण जातक की महत्वकांक्षा और इच्छा पूरी हो सकती हैं।

गुरु (a) शनी (a) नसीब बिंदु, अष्टम भाव में है जिस पर मंगल की चौथी दृष्टि और सूर्य की सातवी दृष्टि के कारण विपरीत राजयोग बनता है। सूर्य का नक्षत्रपति - शुक्र है। जो जातक को महत्वकांक्षी, वैभवी, राजनीतीज्ञ, समाजसेवी, और प्रशासक बनाकर सत्ता देता है।

चलित कुंडली में गुरु (a) शनी (a) और नसीब बिंदु भाग्य भाव में और वर्गोत्तम होने के कारण जातक का भाग्य नकली करता है।

सत्ता, राजकारण, समाजसेवा, यश - अपयश :

सत्ता, सत्तकारण, पदोन्नति, यश प्राप्ति आदि के लिये कर्म स्थान देखा जाता है। जातक के कर्म भाव में शनी की स्थिर और मूल त्रिकोण राशि कुंभ है। कारक ग्रह है सूर्य, गुरु, बुध और शनी है।

कर्म स्थान पर शनी की तीसरी दृष्टि राहु की पंचम दृष्टि, शनी की कुंभ राशि, चंद्र स्थित ग्रह है। चंद्र का नक्षत्र - राहु होने से जातक का राजकारण में सत्ता मिल सकती है। यह पद प्राप्ति गुरु । चंद्र । राहु की दशा में मिल सकती है।

कमैश शनी (a) अन्य भाव में और मंगल की चौथी दृष्टि होने से बार-बार सत्ताधारी से मनभेद हो सकता है और गुरु/मंगल/राहु की दशा में राजीनामा भी दे सकते है।

सुख भाव (४था) का स्वामी सूर्य मिथुन राशि में धन भाव में स्थित है और गुरु (a) और शनी (a) से इच्छित है। बुध सूर्य से दूसरे भाव में चंद्र की राशि में वर्गोत्तम और पुष्कर नवांश में है। सुख भाव पर चंद्र की सफल दृष्टि है। जो जातक को वैभवशाली, समृद्ध, मान्ट, घर, वाहन आदि सर्व प्रकार के सुख से संपन्न कर सकते है।

दाम्पत्य सुख :

जन्म कुंडली में सुख स्थान से दाम्पत्य सुख भी देख सकते है। सुख स्थान में सिंह राशि जिसका स्वामी सूर्य सुख स्थान से ११वे स्थान में है जिससे जातक की इच्छा पूर्ति हो शके परंतु केतु की पंचम दृष्टि भी है जो विभक्ति का योग दे शके. वैवाहिक जीवन के सप्तम भाव - पाप कर्तरी में है परंतु पूर्ण पापकर्तरी में नही है क्योकि अष्टम भाव में शुभ ग्रह गुरु भी शनी के साथ स्थित है। इसलिए जातक का दाम्पत्य सुख अच्छा हो सकता है लेकिन छोटा हो सकता है।

D-7 चार्ट में सप्तम भाव शुभ कर्तरी में है। जातक की शादी की दशा में (गु/बु/बु) में हो सकती है। जातक को विवाह से लाभ हो सकता है। संतान सुख भी अच्छा है। दाम्पत्य जीवन सुखी परंतु छोटा होम सकता है। गुरु / राहु / मंगल की दशा में पत्नी का मृत्यु हो सकता है और विभक्ती का योग हो सकता है।

राज्यविचार - पदोन्नति - अवनति

जातक के D-10 चार्ट में लग्न कुंभ है। लग्नेश शाम आत्माकारक और योगकारक है। कर्म भाव पर गुरु, शुक्र (मालव्य पंचमहापुरुष योग) राहु की पंचम दृष्टि है। जातक अपनी मेहनत से, बुद्धि से, विद्याभ्यास से बहुत ऊँची पदवी हासिल कर सके। जातक गु / शु /रा की दशा में बेरिस्टर बन सके। राहु षष्टम भाव में है। गु / चं / रा की दशा में राजकारण में शामिल हो सकते है। लकिन गु / मं / रा की दशा में विचारों की भिन्नता के कारण राजीनामा दे । श / श / केतु की दशा में बहुत बडी पदवी - Educationist of University मिल शकती है।

श / शु / राहु की दशा में राजकारण में नेता की सत्ता मिल सके ।

श / गु / सू की दशा में जातक अपने देश के लोगों के लिय नयी राजनितिक संस्थापण निर्माण करे और उसका अध्यक्ष बने ।

अरिष्ट ज्ञान - विघ्न

D-30 त्रिशांश चार्ट से जातक का दुर्भाग्य, आपत्ति, महायोग, आयुष्य वगेरे इयत हो सकता है। चार्ट के षष्टम भाव में राहु और केतु दोनों तुला राशि में स्थित है। जिससे जातक को रोग के साथ गुप्त शत्रु, गुप्त

कार्यविधि थी बु / शु / य दशा मे जातक का अरिष्ट होना दर्शाता है। D-30 में ६/८/१२ भाव सक्रिय दिखता है जो कुछ अरिष्ट होगा वह सुचन करता है। कर्म भाव में नेपच्युन, अपनी सत्ता और स्थान गुमाऐंगे वह दर्शाता है।

D-30 खवेदांश कुंडली में भी ६/८/१२ भाव सक्रिय है और मारक बुध और मंगल भी सक्रिय है। इसलिए जातक अपने पराक्रम से भ्रमित मति से अपना कर्म के लिए अपने घर से दूर (उत्तर दिशा तरफ) जाकर रोगिष्ट हो सकता है । कुंभ राशि का हर्षल जिंदगी में बदलाव लाता है।

बाधक शनी की तीसरी दृष्टि अष्टम भाव पर मारक - मंगल की अष्टम दृष्टि भी अष्टम भाव पर है। राहु और केतु भी मारक मंगल की राशि में बैठकर दृष्टि करते है।

६/८/१२ तीनों त्रिक भाव सक्रिय होता है। शनी षष्टम भाव में सूर्य के साथ चंद्र राशि में से द्वादश भाव पर दृष्टि करते है। इसलिए जातक को पहले विघ्न आ सकता है, जेल में भी जा सकते है। बाद में रोग ग्रस्त हो सकते है।

बु / बु / सू / रा / शु की दशा में बिचरी के कारण कोई गुप्त साजिश के कारण मृत्यु हो सकता है। मृत्यु के समय जातक अकेले हो सकते है। जातक का मृत्यु शंकास्पद हो सकता है।

उपसंहार :

जातक की कुंडली से पता चलता है कि जातक बहोत ही पढ़ा-लिखा अच्छे खान दान में अपने पिता के मार्ग पर चलने वाला, वैभवी बहु-मुखी प्रतिभा वाले, बेरिस्टर, राजनितिज्ञ, समाजसेवी और सक्रियतावादी हो सकते है।

अपने सच्चे और नैतिक सिद्धांतो और अपने को देश में धर्म को बचाने के लिए और पर्दे के पीछे देखने की क्षमता के कारण जातक को अपने उच्चतम अधिकारी से मनभेद हो सकता है।

जातक अपने सिद्धांतो के लिये इस्तिफा देने के लिए भी हिचकिचाल नही है। जातक इस दुनिया में 'KARMIK SETTLEMENT' के लिये (अष्टम भाव) आये है। गुरु और शनि दोनों वक्री है और नसीब बिंदु भी वह भाव में है। जातक की कुंडली में ग्रहो का राजा सूर्य दूसरे भाव में स्थित है जो यह अष्टम भाव पर दृष्टि कर रहे है जैसे सूर्य एक साक्षी है।

बुध वक्री और अस्त भी है लेकिन वनोत्तम और पुष्कर नवांश में होने के कारण जातक को शक्ति, सामर्थ्य के साथ तीक्ष्ण बुद्धि भी प्रदान करते है। जातक अपने देश के लोगों के हित के लिए एक नयी राजकारणीय संस्था की भी स्थापक कर सकते है।

जातक की मध्यम आयु (५१-५३) हो सकती है और शंकास्पद, तरीके से कोई अजनबी जग्या पर मृत्यु हो सकती है।

जातक को अपनी देशभक्ति और सकारात्मकता के लिए हमेशा याद रखा जाएगा ।

श्रीमती प्रज्ञा शेठ

–: અંગ્રેજી મીડીયમમાં બાળકોને મૂક્યા હોય તો આ વાંચો :–

મેં ભારતદેશના ઉત્તરથી દક્ષિણ અને પૂર્વથી પશ્ચિમના વિસ્તીર્ણ વિસ્તારોનું પરિભ્રમણ કર્યું છે. આ દેશ એટલો સમૃધ્ધ છે અને તેની પ્રજાનું નૈતિક મૂલ્યોનું સ્તર એટલું ઉન્નત છે કે મેં દેશમાં કોઈ નાગરિક એવો ન જોયો કે જે ભિક્ષુક હોય કેજે ચોર હોય. હું નથી ધારતો કે આવા ઉત્કૃષ્ટ નૈતિક મૂલ્યવાન દેશને આપણે ક્યારેય પણ જીતી શકીએ. સિવાય કે આ દેશની આધ્યાત્મિકતા અને સાંસ્કૃતિક વારસો કે જે રાષ્ટ્રની કરોડરજ્જુ સમાન છે તેનો આપણે નાશ કરી શકીએ.

અને આથી હું દરખાસ્ત કરું છું કે આપણે તેની ગૌરવસમી સદીઓ પુરાણી પ્રાચીન શિક્ષણ પ્રણાલી અને તેની સાંસ્કૃતિક પ્રથાઓને મૂળથી જ બદલીએ કે જેના પરિણામે હિન્દુસ્તાનીઓ માનતા થાય કે જે કંઈ વિદેશી છે અને ઇંગ્લીશ છે તે તેમના કરતા વિશેષ સારું છે અને મહાન છે અને આ કારણે તેઓ પોતાની ઓળખ તેમજ આત્મગૌરવ ગુમાવશે. પોતાનું નિજી સાંસ્કૃતિક સ્વરૂપ ગુમાવશે અને તેઓ એવા નાગરિકો બની જશે કે '' જેવા આપણે તેમને ઈચ્છીએ છીએ.'' (કાળ અંગ્રેજો–સ્વૈચ્છિક ગુલામો)

એ ખરા અર્થમાં આપણા આધિપત્યવાળું ગુલામ રાષ્ટ્ર બની રહેશે.

આપણને ઇતિહાસ(કે ઉઠા) એવો ભણાવાયો કે આપણે અંધકાર યુગમાં જીવતા હતા.

કલકત્તા, ઓક્ટોબર ૧૨, ૧૮૩૬

પરમ પ્રિય પિતાજી !

આપણી શાળાઓ ખૂબ સરસ રીતે ઉન્નતિ કરી રહી છે. હિન્દુઓ પર આ શિક્ષણનો પ્રભાવ અદ્‌ભુત થયો છે. અંગ્રેજી શિક્ષણ મેળવ્યું છે એવો એક પણ હિન્દુ એવો નથી જે સાચા હૃદયથી પોતાના ધર્મને અનુસરતો હોય. થોડા એવા છે જે નીતિના વિચારથી પોતાને હિન્દુ કહે છે અને કેટલાક ખ્રિસ્તી બની રહ્યા છે. એ મારો વિશ્વાસ છે કે જો આપણી આવી જ શૈક્ષણિક નીતિ ચાલતી રહેશે તો અહીંની સન્માનિત જાતિઓમાં આગામી ત્રીસ વર્ષોમાં એક પણ એવો બંગાળી બાકી નહીં બચ્યો હોય જે મૂર્તિપૂજક હોય. આ એમને ખ્રિસ્તી બનાવ્યા વિના જ થઈ જશે. એમના ધર્મમાં હસ્તક્ષેપ કરવાની આવશ્યકતા પણ નહીં રહે. આપણું (અંગ્રેજી) જ્ઞાન અને વિચારશીલતા વધારવાથી એ કામ આપમેળે થઈ જશે. આવી સંભાવના પરમને અત્યંત પ્રસન્નતા થઈ રહી છે.

વાંચવા પછી તમારું સ્વાભિમાન શું કહે છે ?

આપનો પ્રિય
ટી. બી. મેકોલ

आकाश दर्शन

जिज्ञासा - जिज्ञासा ही हैं जो हमे मानवों को बाकी प्राणियों से अलग करती हैं | जिज्ञासा ही मानव प्रगति का आधार हैं। जिज्ञासा ने ही संतो, का सर्जन किया है तो विज्ञानिको को भी दिया जन्म हैं | जिज्ञासा ही नए नए अविष्कारों की सर्जनकर्ता हैं |

इसी जिज्ञासा के चलते हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व आकाश में लाखो योजन दूर गृह-तारों के गुढ़ रहस्यों को खोज निकाला | आश्चर्य की बात तो यह हैं बिना किसी यंत्रों या दुर्बीनो के उन्होंने ग्रह तारों राशियों के रंग भेद सतह, गीत, नाप, दूरी आदि की इतनी सटीक जानकारी कैसे प्राप्त की होगी ? उन्होंने यह भी अध्ययन किया की कैसे उन ग्रहों राशियों के प्रभाव मनुष्य पर पड़ते है, इसीके आधार पर उन्होने ज्योतिषशास्त्र की रचना की, जिसके द्वारा हम मनुष्य के बारे में, उसके स्वभाव के बारे में, उनके भूत, वर्तमान, भविष्य काल के बारे में जान सकते हैं | हमारा उन ज्ञान के सागर ऋषि मुनियों को कोटि कोटि प्रणाम |

मुझे हस्तरेखाशास्त्र का तो खास ज्ञान था और में उसकी प्रैक्टिस भी कर रही थी, लेकिन फिर भी जन्मपत्री द्वारा ज्योतिषशास्त्र सीखने की बड़ी अभिलाषा थी | मैं एक दो जगह सीखने भी गई लेकिन संतुष्टि नहीं हुई | एक दिन आचार्य अशोकजी के ज्योतिष संस्थान का विज्ञापन देखा तो यहाँ सीखने के लिए मैंने इस कोर्स मे दाखिला लिया, इस संस्थान के सभी अध्यापक बहुत ही लगन से, सहनशीलता और प्रेम से हमें पढ़ाते हैं | आचार्य अशोकजी सौम्य शांत और ज्ञान के भंडार है | वे काफी सुचारू रूप से इस संस्थान को चला रहे है, जिसका हमे भरपूर लाभ उठाना चाहिए |

कोर्स के शुरूआत में ही हमे आकाश दर्शन प्रोग्राम के बारे में जानकारी दे दी गई थी | हम सभी छात्र आकाश दर्शन पर जाने को काफी उत्सुक थे | निर्धारित दिन पर हमारी संस्थान की तीन बसे छात्रों को लेकर संध्या होते होते मुंबई के पास वाडा में कैंप हिप्पी हिलस रिसॉर्ट पहुंचे |

वो रिसॉर्ट थोड़ा ऊंचाई पर काफी मनोरम स्थान पर था, वहा रहने के लिए छोटे छोटे टेंट बने हुए थे | भोजन के लिए बड़ा सा हॉल था | बीच में काफी बड़ा खुला मैदान था, जहाँ से आकाश बड़े विस्तार से देखा जा सकता था | जलपान कर हम सब मैदान में इक्कठे हो गए, जहाँ गोलाकार में दरिया बिछी हुई थी और कुछ कुर्सियां भी रखी हुई थी, बीच में माइक की व्यवस्था थी, एक तरफ तीन बड़े बड़े टेलिस्कोप (दूरबीन) लगाये गये थे | आकाश दर्शन की जानकारी देने के लिए एस्ट्रो एक्सपर्ट्स (Astro Experts) बुलाए हुए थे, उनकी टीम लीडर पूर्णा व्यासजी ने माइक लेकर जब हमे आकाश दर्शन की जानकारी देनी शुरु की तो हम सब मंत्र - मुग्ध हो कर सुनने लगे | हमे संक्षिप्त में कार्यक्रम की जानकारी दी, उसके बाद उन्होंने उस समय आकाश में जो तारे उदित थे, उन्हें दिखाया जैसे ध्रुव सप्तऋषि मंडल, शुक्र ग्रह, मंगल इत्यादी ग्रहों के बारे में बताया साथ ही हमे उन्हें दूरबीन से दिखाया |

इसी प्रकार हर प्रहर में अलग अलग उस समय उदित होते ग्रह, राशियाँ, तारासमूह जैसे गुरु, मेष, वृषभ, कन्या, कर्क, सिंह, तुला आदि राशियां ऑरिन उर्सा मेजर कोरिश आदि तारासमुह भी आकाश में देखने को मिले, उनमें से उर्सा मेजर तथा | ऑरिन तारा समूह देखते ही बनते थे | राशियों में वृश्चिक तारा समुह तो मंत्र - मुग्ध कर देने वाला था | ऐसे लग रहा था की मानो आकाश में कोई चलचित्र चल रहा हो , एक के बाद एक राशियों, तारासमुहो का उदित होना और पूरे आकाश पटल पर उनका छा जाना सच में अपने आप में विस्मित कर देने वाला था | पूर्णा व्यास जी इतने उत्साह से पूरी रात खड़े हो कर हमे विस्तार पूर्वक सब जानकारी देती रही | बाद में उन्होंने स्क्रीन पर लैपटॉप की मदत से काफी कुछ दिखाया और समझाया | वे ग्रह तारों से जुड़ी भ्रांतिया और पौराणक कथाओं की भी जानकारी देती रही, उनका ज्ञान और उत्साह वाकई तारीफ के काबिल था, इसी तरह कार्यक्रम के चलते भोर हो गई | भोर के धुंधले प्रकाश में शनि महाराजजी दिखने लगे, जिन्हे हमने दुर्बिन की सहायता से उनके पूरे वलय के साथ देखा |

दुसरे दिन सुबह हम सब छात्र अपने मन में इस ज्ञान से भरपूर रोमांचकारी आकाश दर्शन के बाद प्रफुल्लित मन से घर लौटे। किसी ने सच ही कहा है कि "दुनिया की खूबसूरती सिर्फ आखों से नहीं, ज्ञान से भी देखी जा सकती है"

मंजूश्री शर्मा

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

तारा दर्शन की झलकियाँ

આત્મવિશ્વાસ, આત્મસન્માન અને આત્મસંયમ આ ત્રણ વસ્તુઓ જ જીવનને પરમ શક્તિ બનાવે છે.

VEDIC JYOTISH SANSTHAN

YOG DIVAS

આત્મવિશ્વાસ, આત્મસન્માન અને આત્મસંયમ આ ત્રણ વસ્તુઓ જ જીવનને પરમ શક્તિ બનાવે છે.

गुरु पूर्णिमा महोत्सव २०२२